रजिस्ट्री सं० डी- 222

REGISTERED No. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 31] नई दिल्ली, शनिवार, जुलाई 29, 1972 (श्रावण 7, 1894)

No 31] NEW DELHI, SATURDAY, JULY 29, 1972 (SRAVANA 7, 1894)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

नोटिस

(NOTICE)

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 24 जनवरी 1972 तक प्रकाशित किये गये हैं :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 24th January 1972 :—

अंक Issue No.	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
1	2	3	4

शून्य

—NIL—

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी । मांग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं ।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . .	781
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	1187
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	75
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	1047
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम . . .	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्ट . .	—
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि समीति हैं ।)	1861
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं . .	2991
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश .	409
भाग III—खंड 1—महालेखा परीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं .	1025
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	223
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	75
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं . . .	1193
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें .	145
पूरक संख्या 31—	
22 जुलाई, 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट .	1433
1 जुलाई, 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु सम्बन्धी आंकड़े .	1443

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	781
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1187
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	75
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	1047
PART II—SECTION 1.—Arts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB.-SEC. (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Govtrnment of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories).	1861
PART II—SECTION 3.—SUB.SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) . .	2991
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence . .	409
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India . .	1025
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta . .	223
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	75
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1193
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies . .	145
SUPPLEMENT No. 31—	
Weekly Epidemiological Reports for week-ending 22nd July, 1972	1433
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week end 1st July, 1972	1443

भाग I—खण्ड 1

(PART I—SECTION 1)

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 18 जुलाई 1972

सं० 92-प्रेज/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की सांझियाओं में वीरता के लिए 'वीर चक्र' प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1. स्क्वाड्रन लीडर इकबाल सिंह बिन्द्रा (6360)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर इकबाल सिंह बिन्द्रा एक अग्रिम हवाई अड्डे पर एक लड़ाकू बमवर्षक स्क्वाड्रन की एक टुकड़ी की कमान कर रहे थे। 17 दिसम्बर, 1971 को एक लड़ाकू हवाई गश्त के दौरान, उन्होंने देखा कि शत्रु का एक एफ-104 वायुयान हवाई अड्डे की ओर आ रहा है। इससे पहले कि वह हवाई अड्डे पर आक्रमण कर पाता, उन्होंने उसे युद्ध में उलझा लिया। जोरदार मुकाबिले के सामने शत्रु के वायुयान को अपना मंसूबा छोड़ना पड़ा और उसने बच निकलने का प्रयत्न किया परन्तु स्क्वाड्रन लीडर इकबाल सिंह बिन्द्रा ने उसका पीछा किया और उसे मार गिराया। संक्रियात्मक कार्य करने के अतिरिक्त उन्होंने वायुयानों की उच्चस्तर की सेवाक्षमता का भी पूरा ध्यान रखा।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर इकबाल सिंह बिन्द्रा ने उच्च-कोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. स्क्वाड्रन लीडर प्रीत पाल सिंह गिल (6342)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर प्रीत पाल सिंह गिल ने शत्रु क्षेत्र के बहुत अन्दर तक, महत्वपूर्ण और अति सुरक्षित ठिकानों पर रात में कई सफल उड़ानें भर कर बमबारी की और शत्रु के भारी मुकाबले की परवाह न करते हुए शत्रु के आस्थानों को भारी क्षति पहुंचाई।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर प्रीत पाल सिंह गिल ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

3. स्क्वाड्रन लीडर दिलीप कुमार दास (6334)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में, पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर दिलीप कुमार दास ने एक लड़ाकू बमवार स्क्वाड्रन में पायलट के रूप में कई संक्रियात्मक उड़ानें भरीं। 5 दिसम्बर, 1971 को उन्हें लोंगेवाला पर उड़ान भर कर शत्रु के उस भारी एवं प्रचण्ड आक्रमण को जिसमें वह टैंक आगे ला रहा था, नष्ट करने का आदेश दिया गया। भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद, उन्होंने 5 दिसम्बर 1971 को तीन और 6 दिसम्बर, 1971 को एक उड़ानें भरके शत्रु पर प्रहार किए और उस के चार टैंक बहुत सी मोटर-गाड़ियां और सैनिक जमावों को नष्ट किया। इसके इन कार्यों ने निश्चित रूप से शत्रु को हतोत्साहित कर दिया।

इस कार्यवाही के दौरान स्क्वाड्रन लीडर दिलीप कुमार दास ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया।

4. स्क्वाड्रन लीडर घनश्याम सिंह थापा (6003)
फ्लाइंग (नेवीगेटर)

दिसम्बर, 1971 मे पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर घनश्याम सिंह थापा एक बमबार स्क्वाड्रन में तैनात थे। वे चार बमबार विमानों की उस फार्मेशन के प्रमुख मार्ग-निर्देशक थे जिसने 3/4 दिसम्बर, 1971 की रात को शत्रु के इलाके में काफी अन्दर स्थित महत्वपूर्ण और पाकिस्तानी सुरक्षित वायुसैनिक हवाई अड्डे मसरूर पर पहली बमबारी की। धुंआधार जमीनी गोलाबारी के बावजूद वे अपनी फार्मेशन के वायुयानों को लक्ष्य तक ले गये और ऐन ठिकाने पर सभी बम गिरा कर उसे भारी क्षति पहुंचाई।

इस कार्यवाही के दौरान स्क्वाड्रन लीडर घनश्याम सिंह थापा ने उच्चकोटि की वीरता व्यावसायिक कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया।

5. स्क्वाड्रन लीडर संजय कुमार चौधरी (5863)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर संजय कुमार चौधरी पूर्वी क्षेत्र में तैनात थे। 7/8 दिसम्बर, 1971 की रात को सिलहट में जो कि उस समय शत्रु के कब्जे में था, हेलिकाप्टरों से एक बटालियन सेना उतारने की विशेष कार्यवाही प्रारम्भ की गई। स्क्वाड्रन लीडर चौधरी ने स्वेच्छा से अपनी सेवाएं अर्पित कीं। वहां जाकर पहले

दस्ते को उतारा, डट गये और रोशनी करने के कार्य को स्वयं अपने हाथ में लिया। इस कार्यवाही के दौरान हेलिकाप्टर अवतरण क्षेत्र में दुश्मन ने भारी गोलाबारी की। अपनी सुरक्षा की तनिक भी चिन्ता न करके उन्होंने एक जवान की सहायता से अवतरण क्षेत्र को रोशन करने का प्रयास किया। थोड़ी ही देर बाद इनका साथी जवान दुश्मन की गोलाबारी में काम आया। परन्तु स्क्वाड्रन लीडर चौधरी निडर होकर अकेले ही रोशनी करते रहे और रात भर अवतरण क्षेत्र को उजागर रखा। इससे हेलिकाप्टरों से जवानों को उतारने का काम सारी रात जारी रहा और सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस कार्यवाही के दौरान स्क्वाड्रन लीडर संचय कुमार चौधरी ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

6. स्क्वाड्रन लीडर जसबीर सिंह (5783)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर जसबीर सिंह एक लड़ाकू बमबार स्क्वाड्रन के वरिष्ठ पायलट थे। उन्होंने 6 दिसम्बर, 1971 को लोंगेवाला क्षेत्र में शत्रु के ठिकानों के पीछे काफी दूर तक, एक सामरिक टोह के लिए उड़ान भरी और बड़े महत्व की विस्तृत जानकारी एकत्र कर लाए जिससे इस क्षेत्र में लड़ाई का रुख बदल कर हमारे पक्ष में हो गया। बाद में, उसी दिन उन्होंने उसी क्षेत्र में एक टैंक और बहुत सी मोटर-गाड़ियां नष्ट कीं। 9 दिसम्बर, 1971 को उन्होंने फिर, एक और अत्यन्त लाभदायक सामरिक टोह उड़ान के दौरान भारी जर्मनी गोलाबारी के बावजूद, उन्होंने शत्रु के चार टैंकों पर हमला करके उन्हें नष्ट कर दिया। इनकी उड़ानें इस क्षेत्र में शत्रु के आक्रमण को असफल बनाने में कारगर सिद्ध हुई।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर जसबीर सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया।

7. स्क्वाड्रन लीडर विष्णु नारायण जौहरी (5676)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर विष्णु नारायण जौहरी एक लड़ाकू बमबार स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। 5 दिसम्बर, 1971 को जब वे एक सामरिक टोह उड़ान का नेतृत्व कर रहे थे तब उन्होंने भावल नगर के पास टैंक ले जाती हुई एक रेल-गाड़ी को देखा। उन्होंने फौरन उस पर हमला कर दिया। इस हमले के दौरान विमान-भेदी तोपों की मार से उनके विमान के बाएं पंख को क्षति पहुंची, परन्तु उन्होंने अविचलित और निडरता से, अपनी सुरक्षा की तनिक भी चिन्ता न करके, अपना हमला जारी रखा और शत्रु के बहुत से टैंक नष्ट कर दिए। हमला करके वापस आने के बाद उन्होंने देखा कि उनके विमान के बांएं पंख को आग लगी हुई है। भारी सूझबूझ और कुशल उड़ान से, वे अपने अपंग विमान को सफलतापूर्वक वापिस अड्डे पर ले आए। उन्होंने और भी बहुत सी सफल उड़ानें भरी।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर विष्णु नारायण जौहरी ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया।

8. स्क्वाड्रन लीडर अशोक प्रताप राव शिंदे (5671)
फ्लाइंग (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर अशोक प्रताप राव शिंदे, दिसम्बर, 1971 की पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, एक लड़ाकू स्क्वाड्रन में सर्विस पायलट के रूप में कार्य कर रहे थे। इन्होंने हमारी सेना की सहायता में कई जमीनी हमलों का नेतृत्व किया। छम्ब जोरियां क्षेत्र में दो मोर्चों पर शत्रु के टैंकों को आगे बढ़ने से रोकने का श्रेय उनको ही है। भारी विमान-भेदी तोपों की गोलाबारी के बावजूद, अपनी जान को हथेली पर रख कर उन्होंने अपनी फार्मेशन के आक्रमण का नेतृत्व किया, और शत्रु के 7 टैंक और 27 गाड़ियों को नष्ट कर दिया। इस क्षेत्र में हमारी थल-सेनाओं को शत्रु के दबाव से मुक्त कराने में इस कार्यवाही ने निर्णायक योगदान दिया।

आद्योपान्त लीडर अशोक प्रताप राव शिंदे ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

9. स्क्वाड्रन लीडर चरणजीत सिंह संधु (5591)
फ्लाइंग (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर चरणजीत सिंह संधु, दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान एक हेलिकाप्टर-यूनिट की कमान कर रहे थे। 7/8 दिसम्बर, 1971 की रात, उन्होंने पूर्वी क्षेत्र में शत्रु के मोर्चों के काफी अन्दर हेलिकाप्टरों से सेना उतारने की कार्यवाही का खुद नेतृत्व किया। पहली कार्यवाही के दौरान शत्रु ने उन पर गोलाबारी कर दी फिर भी उन्होंने सैनिकों को हेलिकाप्टरों से उतारने में सफलता प्राप्त की। उसी रात, उन्होंने ऐसी पांच और उड़ानों में भाग लिया। संक्रियाओं के दौरान उन्होंने ऐसी कुल 34 जोखम भरी कार्य-वाहियों का नेतृत्व किया।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर चरणजीत सिंह संधु ने उच्च-कोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया।

10. स्क्वाड्रन लीडर कल्याण कुमार दत्त (5450)
फ्लाइंग (नेविगेटर)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर कल्याण कुमार दत्त ने एक बमवर्षक स्क्वाड्रन में दिशा निदेशक नेता के रूप में स्क्वाड्रन की लगातार सफलताओं में भारी योगदान दिया। उन्होंने स्क्वाड्रन को सभी उड़ानों और रूट मिशनों का मार्ग-निर्देशन बड़ी सूझबूझ और होशियारी से किया। अपने स्क्वाड्रन, कमांडर के नेविगेटर होने के अलावा उन्होंने बहुत कठिन और खतरनाक उड़ानों को खुद भरा। रात के समय एक हवाई अड्डे पर हमला करने के लिए विशेष रूप से भरी गई उड़ान में उन्होंने बहुत नीची, 100 से 200 फुट तक की, उड़ान का सफल मार्ग-निर्देशन

किया, वह भी पहाड़ी इलाके में। परिणामस्वरूप पहले ही हमले में दौड़पथ नष्ट कर दिया गया।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर कल्याण कुमार दत्त ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया।

11. स्क्वाड्रन लीडर सिंघघट्टा सुब्बारामू (5371)
फलाइंग (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर सिंघघट्टा सुब्बारामू, दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान एक लड़ाकू स्क्वाड्रन में तैनात थे। उन्होंने लड़ाकू हवाई गश्त, दूसरे वायुयानों आदि के संगरक्षक और शत्रु के वायुयानों को बीच रास्ते में रोकने के लिए कुल 32 उड़ानें भरीं। उन्होंने ये उड़ानें पहाड़ी इलाकों में, खराब मौसम और रात के घटाटोप अंधेरे में भरीं। ऐसी हर संगरक्षण उड़ान के दौरान उन्होंने इस बात का ध्यान रखा कि हमारे प्रहारक दल पर शत्रु हवाई हमले न कर सकें। इसी से प्रहारक दल अपने लक्ष्यों पर सफल हमले कर सके। साथ ही, वे हर बार प्रहारक दल को ठिकाने पर सुरक्षित लौटा लाते रहे।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर सिंघघट्टा सुब्बारामू ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया।

12. स्क्वाड्रन लीडर दिनेश चन्द्र भण्डारी (5219)
फलाइंग (नेविगेटर)

स्क्वाड्रन लीडर दिनेश चन्द्र भण्डारी, दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, एक संक्रियात्मक बममार स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे थे। वरिष्ठ नेविगेटर के नाते शत्रु के विभिन्न दुभेदय लक्ष्यों पर हवाई हमलों के नेतृत्व और उनकी योजना तैयार करने की जिम्मेदारी उन पर थी। उन्होंने शत्रु के उस इलाके में काफी भीतर स्थित लक्ष्यों पर नौ हवाई हमले किए जो विमानों और जमीन पर लगी विमान भेदी तोपों से भली-भांति सुरक्षित थे। उन्होंने कुछ उड़ानें तो दिन की रोशनी में भरीं, हालांकि यह काम बड़े जोखम का था। शत्रु के लक्ष्यों पर इन हमलों में उन्होंने दृढ़-निश्चय, साहस और सुझबूझ का परिचय दिया, जिसने दूसरे नेविगेटरों को भी प्रेरणा दी। अन्य कई कार्यवाहियों में भी इनके कुशल मार्ग दर्शन और उचित परामर्श से सफलता मिली।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर दिनेश चन्द्र भण्डारी ने उच्च-कोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

13. स्क्वाड्रन लीडर किरपाल सिंह (5115), वी० एम०
फलाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर किरपाल सिंह ने अपनी जान हथेली पर रख कर, शत्रु के वायु और थल सेना के भारी विरोध के बावजूद, 9 सफल संक्रियात्मक उड़ानें भरीं। इन उड़ानों से मिली सूचनाएं हमारी थल और वायु सेनाओं के लिए बड़ी काम की सिद्ध हुई, इन्हीं के आधार पर हमारी सेनाओं ने तेजी से कार्यवाही करके शत्रु का जमाव तोड़ने में सफलता प्राप्त की।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर किरपाल सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया।

14. स्क्वाड्रन लीडर अनिल कुमार भद्रा (5114)
फलाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर अनिल कुमार भद्रा ने एक बमबार स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमांडर के रूप में शत्रु सीमा में काफी अन्दर तक जाकर रात्रि में बमवर्षक उड़ानें कीं और उनका नेतृत्व भी किया तथा शत्रु के अत्यन्त महत्वपूर्ण और सुरक्षित सैनिक ठिकानों पर आक्रमण किया। एक बार नीची उड़ान भरते समय, उन पर शत्रु ने विमान भेदी तोपों से आक्रमण कर दिया। फिर भी, उन्होंने अपना आक्रमण जारी रखा और लक्ष्यों पर बमवर्षा करके, शत्रु को बहुत अधिक नुकसान पहुंचाया।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर अनिल कुमार भद्रा ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया।

15. स्क्वाड्रन लीडर जसजीत सिंह (5100)
फलाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर जसजीत सिंह ने शत्रु के अत्यन्त सुरक्षित ठिकानों पर अनेकों संक्रियात्मक उड़ानें भरीं। जमीनी भारी गोलाबारी के बावजूद, उन्होंने अपने आक्रमण जारी रखे और शत्रु के अनेक टैंकों, तोपखानों और बंकरों को नष्ट किया। साथ ही वे, वायुयानों की देख-रेख का भी निरीक्षण करते रहे, और इस प्रकार आक्रमण के लिए अधिक से अधिक वायुयान उपलब्ध कराए।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर जसजीत सिंह ने उच्च कोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और कर्त्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

16. स्क्वाड्रन लीडर रवीन्द्रनाथ बाली (5059)
फलाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर रवीन्द्रनाथ बाली एक लड़ाकू बमबार स्क्वाड्रन के वरिष्ठ पायलट थे। उन्हें लोंगेवाला में बढ़ती हुई शत्रु की एक विशाल टैंक रेजिमन्ट को नष्ट करने को भेजा गया। उन्होंने 5 दिसम्बर, 1971 के तीन प्रहारक उड़ानों और 6 दिसम्बर, 1971 को एक उड़ान का नेतृत्व किया। इन आक्रमणों में उन्होंने शत्रु की भारी विमान-भेदी तोपों की गोलाबारी के बावजूद, बल्कि कई बार तो शत्रु की वायुसेना के कड़े विरोध के बावजूद भी, उसके तीन टैंक नष्ट किए और अन्य अनेक टैंकों और गाड़ियों को भारी क्षति पहुंचाई। 7 दिसम्बर, 1971 को उन्होंने उसी क्षेत्र पर एक प्रहारक उड़ान का फिर नेतृत्व किया और दो टैंक नष्ट किए। इस आक्रमण में दूसरी उड़ान से लौटते समय उनके वायुयान पर जमीन से गोला लगा और नियंत्रण सतहों का आधा भाग उड़ गया। वायुयान को पहुंची इस क्षति के बावजूद वे उसे कुशलतापूर्वक अड्डे पर वापस ले आए। उनकी उड़ानों

ने शत्रु के आक्रमण को विफल करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और संक्रियाओं की पूर्ण सफलता में सहायता दी।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर रवीन्द्रनाथ बाली ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया ।

17. स्क्वाड्रन लीडर सुरेश दामोदर कर्णिक (5056)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर सुरेश दामोदर कर्णिक एक बममार स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमांडर थे । उन्होंने पश्चिमी और पूर्वी, दोनों क्षेत्रों में, दिन में तथा रात को, 6 बहुत महत्वपूर्ण और कठिन उड़ानें भरीं और शत्रु के हवाई अड्डों पर बम वर्षा की तथा शत्रु के बोटों पर भी दिन में आक्रमण करके उन्हें नष्ट किया । इन हवाई आक्रमणों में उन्हें शत्रु की भारी विमान भेदी गोलाबारी का सामना करना पड़ा, जिसके फलस्वरूप उनका वायुयान गोला लगने से क्षतिग्रस्त हो गया । इस सब के बावजूद, उन्होंने अपने आक्रमण जारी रखे और शत्रु के अनेकों बोटें नष्ट कीं । शत्रु की विमान भेदी तोपों की भारी गोलाबारी के बावजूद, उन्होंने चटगांव के हवाई अड्डे पर बमबारी करने के लिए दिन में उड़ान भरी । इस उड़ान में, उन्होंने बमबारी करके शत्रु के पेट्रोल—तेल के विशाल भंडार को नष्ट कर दिया । अपने हिस्से की उड़ानें भरने के अतिरिक्त, उन्होंने उड़ानों की निगरानी और फ्लाइट के प्रशासन में भी सहयोग दिया ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर सुरेश दामोदर कर्णिक ने उच्च-कोटि की वीरता, दृढ़ निश्चय और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

18. स्क्वाड्रन लीडर कृष्ण कुमार बख्शी (5012)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर कृष्ण कुमार बख्शी लड़ाकू बममार स्क्वाड्रनों में से एक के वरिष्ठ पायलट थे । 6 दिसम्बर, 1971 को वह नया छोड़ और धोरां क्षेत्र पर एक मिशन की अगुआई कर रहे थे । जब उनका मिशन लक्ष्य की ओर बढ़ रहा था तो उनके नम्बर दो ने शत्रु के चार सैबर वायुयानों की एक फार्मेशन देखी । यद्यपि शत्रु संख्या में अधिक था तो भी वह शत्रु के वायुयान की ओर मुड़े और उन्हें हवाई युद्ध में उलझा लिया और इस मुठभेड़ में एक सैबर वायुयान को मार गिराया । इसके अतिरिक्त, शत्रु की भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद उन्होंने अनेक हवाई हमलों का नेतृत्व किया जिनके कारण शत्रु के सुरक्षित मोर्चों, गाड़ियों और सेनाओं को भारी नुकसान पहुंचा ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर कृष्ण कुमार बख्शी ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया ।

19. स्क्वाड्रन लीडर ऐलन डेविड अले (4975)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमांडर के रूप में स्क्वाड्रन लीडर ऐलन डेविड अले ने हमारी थल सेनाओं की सहायता, शत्रु के हवाई हमलों को रोकने और उसके ठिकानों पर हमले के करने के लिए 15 संक्रियात्मक उड़ानें भरीं । 4 और 6 दिसम्बर के बीच उन्होंने पूर्वी क्षेत्र के सैदपुर इलाके में हवाई हमलों की अगुआई की और तीन स्टीमर तथा चार रेलगाड़ियां बरबाद कर दीं । उन्होंने तीन मार्शल यार्डों को भी भारी नुकसान पहुंचाया और चार पुलों तथा चार बंकरों को भी बरबाद कर दिया । पश्चिमी क्षेत्र में, स्याल-कोट और वजीराबाद के मार्शल-यार्डों पर किए गए एक हवाई हमले के वे उप-नेता थे । शत्रु की भारी जमीनी गोलाबारी के बाव-जूद, उन्होंने मार्शल-यार्डों को भारी नुकसान पहुंचाया ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर ऐलन डेविड अले ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया ।

20. स्क्वाड्रन लीडर गुरसरन सिंह अहलुवालिया (4912)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर गुरसरन सिंह अहलुवालिया एक बममार स्क्वाड्रन के वरिष्ठ फ्लाइट कमांडर थे । वे यूनिट की बममारी की कार्य-वाहियों की योजना, सामरिक चालों, शस्त्र पहुंचाने और सब प्रकार की निगरानी के जिम्मेदार थे । उनके योजना बनाने और फिर उन पर अमल करने की कुशलता ने दूसरे वायु और भू-कर्मियों को भी प्रेरणा दी । योजना पूरी करने के सिलसिले में, उन्होंने सात उड़ानें भरीं, जिनमें से तीन बार तो शत्रु की भारी विमान भेदी गोलाबारी के कारण उनका वायुयान क्षतिग्रस्त भी हुआ परन्तु इसके बावजूद उन्होंने अपने मिशन सफलता से पूरे किए ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर गुरसरन सिंह अहलुवालिया ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसयिक कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया ।

21. स्क्वाड्रन लीडर चरन जीत सिंह (4823), वी० एस० एम०
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर चरन जीत सिंह ने शत्रु के इलाके पर अनेक उड़ानें भरीं और शत्रु क्षेत्र के लक्ष्यों और उसके सैन्य-विन्यास के बारे में बहुत ही मूल्यवान सूचनाएं लाए, जिनसे हमलों की योजना बनाने और उन्हें कार्यान्वित करने में बड़ी मदद मिली । पूरा खतरा मोल ले कर भी, उन्होंने स्वेच्छा और प्रसन्नता से, ये उड़ानें भरी । इन उड़ानों में, वे दिन में ही निडर हो कर शत्रु के इलाके में बहुत दूर तक घुस गए ।

आद्योपान्त स्क्वाड्रन लीडर चरन जीत सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़निश्चय और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

22. फ्लाइट लेफ्टिनेंट सुरिन्दर सिंह मल्होत्रा (8449)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुरिन्दर सिंह मल्होत्रा एक लड़ाकू बमवार स्क्वाड्रन में काम कर रहे थे । 12 दिसम्बर को उन्हें रिसालवाला हवाई अड्डे, जो शत्रु क्षेत्र में काफी अन्दर था, के फोटो लाने के लिए तैनात किया गया । 4 किलोमीटर की ऊंचाई से फोटो लेने थे ताकि पूरे हवाई अड्डे के चित्र आ जाएं । जब वे इतनी ऊंचाई पर आए तो उन्होंने देखा कि हवाई अड्डे पर शत्रु के दो मिग-19 वायुयान उड़ रहे हैं । इन में से एक वायुयान उनसे आगे दाएं को था और

उनकी तरफ मुड़ कर आ रहा था। उन्होंने दक्षता से अपने वायुयान को घुमाया और अपने को मिग-19 के पीछे कर लिया। जैसे ही शत्रु का वायुयान उनकी गोलाबारी की सीमा में आया, उन्होंने गोलाबारी शुरू कर दी और देखा कि शत्रु के वायुयान से धुआं निकल रहा था और वह नीचे को जा रहा था। इस मुठभेड़ के बाद वे अपने वायुयान को अपने अड्डे पर सुरक्षित वापस ले आए। इससे पहले के अवसरों पर भी, उन्होंने इसी हवाई अड्डे के फोटो लिए थे और अपने साथ बहुत अच्छे फोटो लाए थे, जोकि हमारी संक्रियाओं और योजना के लिए बहुमूल्य सिद्ध हुए थे। इसके अतिरिक्त जमीन से शत्रु की भारी गोलाबारी के बीच उन्होंने कई बार उड़ानें भर कर निकट से हवाई सहायता प्रदान की और शत्रु के वायुयानों को बीच में रोका।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट सुरिन्दर सिंह मल्होत्रा ने उच्च-कोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

23. फ्लाइट लेफ्टिनेंट रमेश चन्दर गोसाई (9447)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेंट रमेश चन्दर गोसाई को, जो कि एक लड़ाकू बमबार स्क्वाड्रन में पायलट थे, 5 दिसम्बर और 6 दिसम्बर, 1971 को लोंगेवाला पर शत्रु के भारी हल्ले पर आक्रमण करने का कार्य सौंपा गया। शत्रु की भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद उन्होंने उसके पांच टैंक कई तोपखानों और कई गाड़ियों को तहस नहस कर दिया।

इस कार्यवाही में फ्लाइट लेफ्टिनेंट रमेश चन्दर गोसाई ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

24. फ्लाइट लेफ्टिनेंट इकबाल अली सैयद (8420)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेंट इकबाल अली सैयद एक लड़ाकू बमबार स्क्वाड्रन में काम कर रहे थे। उन्होंने कई संक्रियात्मक उड़ानें भरीं और नौ टैंक, आठ गाड़ियां, एक तोपखाने, एक तेल भंडार, एक इमारत, एक प्रेक्षण बुर्ज और एक तेल ने भरी रेलगाड़ी नष्ट की। उन्होंने ऐसे स्थानों पर भी आक्रमण किया जहां शत्रु की सेना और टैंकों आदि का जमाव था।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट इकबाल अली सैयद ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

25. फ्लाइट लेफ्टिनेंट महाबीर प्रसाद प्रेमी (8378)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेंट महाबीर प्रसाद प्रेमी राजस्थान सेक्टर में एक हेलिकोप्टर टुकड़ी की कमान कर रहे थे। 6 दिसम्बर 1971 को जब वे हताहतों को बाहर निकालने में लगे हुए थे, उन्होंने अपने हेलिकोप्टर के पास एक बिना फटा बम देखा। उन्होंने अनुभव किया यदि बम फट गया तो उनके हेलिकोप्टर को क्षति पहुंचेगी इसलिए उन्होंने हेलिकोप्टर को उड़ा ले जाने का निर्णय किया। उन्होंने हेलिकोप्टर चालू किया ही था कि हवाई अड्डे पर हवाई हमले की चेतावनी दी गई। इसके बावजूद, उन्होंने उड़ान की और हेलिकोप्टर को सुरक्षित क्षेत्र में जा उतारा। इसके तुरन्त बाद, बम फट गया, किन्तु उनकी समयोचित कार्यवाही से हेलिकोप्टर बच गया। 11 दिसम्बर, 1971 को उन्होंने एक ऐसे क्षेत्र से हताहतों को निकाला, जिस पर उस समय शत्रु हवाई हमला कर रहा था।

इस कार्यवाही में फ्लाइट लेफ्टिनेंट महाबीर प्रसाद प्रेमी ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

26. फ्लाइट लेफ्टिनेंट गोविन्द चन्द्र सिंह राजवाड़ (8103), वी० एस० एम०
फ्लाइंग (नेविगेटर)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, लेफ्टिनेंट गोविन्द चन्द्र सिंह राजवाड़ ने अनेकों जोखिम पूर्ण उड़ानें कीं और उन्हें सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। इन उड़ानों से प्राप्त सूचनाओं से हमें अपनी कार्यवाहियों की संक्रियात्मक योजना बनाने और उन्हें सफलता से पूरा करने में काफी सहायता मिली।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट गोविन्द चन्द्र सिंह राजवाड़ ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

27. फ्लाइट लेफ्टिनेंट मोहिन्दर सिंह सन्धु (8101)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मोहिन्दर सिंह सन्धु ने शत्रु के इलाके पर संक्रिया-त्मक टोह के लिए कई उड़ानें भरीं। 4 दिसम्बर, 1971 को उन्हें सरगोधा पर रात की हवाई उड़ान के लिए तैनात किया गया। उन्होंने इस उड़ान को सफलतापूर्वक पूरा किया।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट मोहिन्दर सिंह सन्धु ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

28. फ्लाइट लेफ्टिनेंट शिविन्दर सिंह बेन्स (7727)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेंट शिविन्दर सिंह बेन्स ने एक फाइटर स्क्वाड्रन के पायलट की हैसियत से पुंछ, उड़ी और कारगिल क्षेत्रों में हमारी थलसेना की निकट से सहायता के लिए 14 संक्रियात्मक उड़ानें भरीं। शत्रु की थल सेनाओं के भारी विरोध के बावजूद उन्होंने काफी अन्दर तक शत्रु के इलाके में उड़ानें भरी। उन्होंने हाजीपीर के पहाड़ी भाग में शत्रु के ट्रकों के दो काफलों को नष्ट कर दिया। इनमें से एक उड़ान में, पुंछ क्षेत्र में उनके वायुयान पर जमीन से गोली लगी, फिर भी वायुयान को अड्डे पर सुरक्षित वापिस ले आए।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट शिविन्दर सिंह बेन्स ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

29. फ्लाइट लेफ्टिनेंट हरबंस परमिन्दर सिंह (7485)
फ्लाइंग (नेविगेटर)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट हरबंस परमिन्दर सिंह एक मबवार स्क्वाड्रन में सेवारत थे। 5 दिसम्बर, 1971 को उन्हें शत्रु के एक हवाई अड्डे पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया। लक्ष्य तक पहुंचने के लिए शत्रु-सीमा के काफी अन्दर तक जाना पड़ता था और रास्ते में शत्रु के रेडार काफी संख्या में लगे थे। स्वयं लक्ष्य की रक्षा के लिए भी शत्रु के लड़ाकू वायुयान और विमानभेदी तोपें सन्नद्ध थीं। फिर भी, वे लक्ष्य तक पहुंच गए और सही निशाने से बमबारी की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 6 अन्य मिशन भी सफलतापूर्वक पूरे किये।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट हरबंस परमिन्दर सिंह ने उच्च-कोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

30. फ्लाइट लेफ्टिनेंट नितिन गजानन जुझारकर (7477)
फ्लाइंग (नेविगेटर)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेंट नितिन गजानन जुझारकर ने शत्रु के प्रदेश के ऊपर फोटो-टोह के लिए बहुत सी जोखिम भरी उड़ानें भरीं। उन्हें जो भी कार्य सौंपा गया, उन्होंने उसे सदा पूरा किया। उन्होंने इन उड़ानों में जो सूचनाएं एकत्र कीं, उनसे युद्ध के सफल-संचालन में काफी सहायता मिली।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट नितिन गजानन जुझारकर ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल औल कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

31. फ्लाइट लेफ्टिनेंट सैयद शहीद हुसैन नकवी (7193)
फ्लाइंग (पायलट)

फ्लाइट लेफ्टिनेंट सैयद शहीद हुसैन नकवी दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान एक लड़ाकू स्क्वाड्रन में काम कर रहे थे। उन्होंने शत्रु-प्रदेश के भीतर घुस कर 19 उड़ानें भरीं। 9 दिसम्बर, 1971 को जब वे पश्चिमी क्षेत्र में एक इलाके की सामरिक नजरी टोह के मिशन पर थे, तो शत्रु की भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद वे शत्रु के क्षेत्र पर करीब 12 मिनट उड़ान भरते रहे और महत्वपूर्ण सूचनाएं लाए। उन्होंने 3 रेलवे यार्डों पर अनेक आक्रामक उड़ानें कीं। हालांकि शत्रु ने इस क्षेत्र की सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध कर रखा था, फिर भी उन्होंने आक्रमण जारी रखा और ईंधन तथा अन्य सामान ले जाती हुई कई गाड़ियों में आग लगा दी। इन मिशनों के दौरान उनका निशाना अचूक और कारगर रहा, और उनके कौशल के ही कारण हमारे सभी वायुयान अपने मिशनों से सुरक्षित वापस लौट सके।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट सैयद शहीद हुसैन नकवी ने उच्च-कोटि की वीरता व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

32. फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनजीत सिंह ढिल्लों (7021), वी०एम०
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनट मनजीत सिंह ढिल्लों ने छम्ब, शकरगढ़ और पुंछ के क्षेत्रों में 27–50 घन्टों की 50 उड़ानें कीं। जौड़ियां क्षेत्र में, उन्होंने 6, 8, 10 और 11 दिसम्बर, 1971 को काफी संख्या में हताहतों को बाहर निकाला। 7 दिसम्बर, 1971 को जब वे छम्ब क्षेत्र में एक मिशन पर थे तो उन्हें ऐसे समय ऊधमपुर हवाई अड्डे से उड़ान करनी पड़ी जबकि शत्रु के वायुयान पास में ही थे। रास्ते में उन्हें शत्रु के 9 वायुयान और भी दिखाई दिए और जब वे जोड़ियां पहुंचे तो शत्रु के वायुयान और तोपें भारी गोलाबारी कर रही थीं। वे चतुरता से हेलिकोप्टर को बहुत नीचे ले आए और अपना मिशन सफलतापूर्वक पूरा किया। 10 दिसम्बर, 1971 को उन्होंने पूरे युद्ध-क्षेत्र की सेक्टर टोह उड़ान का कार्य संभाला और शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद सौंपे गए कार्य को पूरा किया। उसी दिन उन्होंने 15 हताहतों को बाहर निकाला। 11 दिसम्बर, 1971 को उन्होंने शकरगढ़ क्षेत्र के एक कामचलाऊ हेली पैड से 8 हताहत बाहर निकाले।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनजीत सिंह ढिल्लों ने उच्च-कोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

33. फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट चन्द्र मोहन सिंगला (6893),
फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट चन्द्र मोहन सिंगला पूर्वी क्षेत्र में एक हेलीकाप्टर यूनिट में सेवारत थे। 7/8 दिसंबर, 1971 की रात को उन्होंने एक सशस्त्र हेलीकाप्टर में उड़ान की और सिलहट क्षेत्र में हेली-काप्टरों से सेना पहुंचाने के मिशन को रक्षावरण प्रदान किया। इस मिशन के दौरान ,शत्रु ने उन पर जमीन से जोरदार गोलाबारी की जिससे उनके हेलीकाप्टर में 8 गोलियां लगीं फिर भी उन्होंने ये मिशन जारी रखे और 4–1/2 घंटे तक मिशन की रक्षा की। इस बीच, उन्होंने जमीनी लक्ष्यों पर अचूक निशाने से 35 राकेट छोड़े। उसके बाद भी उन्होंने 7 दिसंबर, से 12 दिसंबर तक हर रात शत्रु प्रदेश में और उसके मोर्चों के पीछे तक जोखिम भरी उड़ानें जारी रखीं।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चन्द्र मोहन सिंगला ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

34. फ्लाइट सूपिटनेंन्ट पुष्प कुमार वैद (6892),
फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971, में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट पुष्प कुमार वैद पूर्वी क्षेत्र में नियुक्त एक हेलीका-प्टर यूनिट में कार्य कर रहे थे। एक बार इस क्षेत्र में एक स्थल सेना टुकड़ी को हवाई रास्ते से ले जाने का निर्णय किया गया। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट पुष्प कुमार वैद भली-भांति जानते हुए कि हेलीकाप्टर उतारने के क्षेत्र में पर्याप्त रोशनी नहीं होगी और उतरने पर शत्रु उन पर भारी गोलाबारी करेगा, फिर भी इस मिशन को पूरा करने के लिए स्वयं अपनी सेवाएं अर्पित की और मिशन को सफलता-पूर्वक पूरा किया। इसके बाद भी, उन्होंने शत्रु के मोर्चों के पीछे 34 जोखिम भरी उड़ानें की।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट पुष्प कुमार वैद ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

35. फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनबीर सिंह (6771), फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनबीर सिंह पूर्वी क्षेत्र में एक संक्रियात्मक स्क्वाड्रन में तैनात थे। उन्होंने जवाबी हवाई और जमीनी हमले की सहायता के लिए बंगलादेश पर 20 उड़ानें भरीं। एक रक्षार्थ उड़ान के दौरान, उन्होंने शत्रु के वायुयानों को सफलतापूर्वक उलझा लिया जिससे उन्हें उस मुख्य फार्मेशन पर अपने आक्रमण छोड़ने पड़े जो शत्रु के हवाई अड्डे पर आक्रमण कर रही थी। उन्होंने दिन-रात शत्रु के अत्यधिक सुरक्षित हवाई अड्डों पर बमबारी की। उन्होंने सेनाओं, बंकरों, तोपखानों, टैंकों के गढ़ों और रेडियो संचार केन्द्रों जैसे विभिन्न लक्ष्यों पर राकेट तथा बम गिराने में भी भाग लिया। इन लक्ष्यों पर विभिन्न गोलों की तोपें लगी हुई थी और अनेक अवसरों पर उन का विमान जमीनी गोलाबारी का निशाना बना।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनबीर सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और उड़ान दक्षता का परिचय दिया।

36. फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनजीत सिंह सेखों (6756), वी एम, फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनजीत सिंह सेखों, अग्रिम पंक्ति के लड़ाकू स्क्वाड्रन की एक टुकड़ी की कमान कर रहे थे। उन्होंने जम्मू और कश्मीर के अति दुर्गम क्षेत्र में कम ऊंचाई पर 14 उड़ानें भरीं और शत्रु के कई बंकरों, गाड़ियों, तोपों, मार्टरों और तेल और गोला-बारूद के भंडारों को भारी क्षति पहुंचाई। उन्होंने ये उड़ानें भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद कीं। कारगिल, टिथवाल, पुंछ और उड़ी युद्ध-क्षेत्रों में उन्होंने अपनी थल सेनाओं की सफलता में ठोस योगदान दिया। उन्होंने इस बात का भी ध्यान रखा कि वायुयान अच्छी से अच्छी हालत में रहे।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनजीत सिंह सेखों ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

37. फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुक्के श्रीकान्तशास्त्री सुरेश (6742), फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुक्के श्रीकान्तशास्त्री सुरेश एक लड़ाकू बमवर्षक स्क्वाड्रन में थे। 5 दिसंबर, 1971 को उन्हें लोंगेवाला में शत्रु के उस प्रचंड आक्रमण को, जिसमें उसने एक रेजिमेन्ट टैंक आगे रखे हुए थे, नाकाम करने का आदेश दिया गया। भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद, इस कार्यवाही के दौरान, उन्होंने दो टैंकों को नष्ट किया और बहुत से अन्य टैंकों को क्षति पहुंचाई। आक्रमण के दौरान उनके वायुयान पर नीचे से एक गोला लगा जिससे वायुयान को क्षति पहुंची परंतु वे उसे कुशलतापूर्वक अड्डे पर सुरक्षित लौटा लाए। 13 दिसंबर, 1971 को, बमबारी पर जाते हुए, उन्होंने एक सैबर जैट को उलझाया और उसे मार गिराया।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुक्के श्रीकान्तशास्त्री सुरेश ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

38. फ्लाइट लेफ्टिनेंट परमिन्दर पाल सिंह कवात्रा (11383) फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट परमिन्दर पाल सिंह कवात्रा एक लड़ाकू स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे थे। उन्होंने पुंछ, उड़ी, टिथवाल और कारगिल क्षेत्रों में अनेक उड़ानें भरीं। इनमें से तीन उड़ानों में तो वे मिशन के नेता थे। उन्होंने सभी मिशनों में सफलता प्राप्त की। 15 और 16 दिसंबर, 1971 को जब वे शत्रु की चौकियों पर आक्रमण कर रहे थे तो उनके वायुयान के इंजन बंद हो गए, किन्तु उन्होंने इंजनों को पुनः चालू करके आक्रमण जारी रखे। 15 दिसंबर, 1971 को, शत्रु के हवाई हमले में हमारे एक हवाई अड्डे के ब्लास्ट पेन के छद्मावरण-जाल में आग लग गई। सर पर मंडराते शत्रु के वायुयानों की परवाह किए बिना वे तुरंत उसकी ओर भागे और उन्होंने आग बुझा दी।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट परमिन्दर पाल सिंह कवात्रा ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

39. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विस्टन रबिन्दर संजीव राव (10191) फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विस्टन रबिन्दर संजीव राव राजस्थान क्षेत्र में एक ब्रिगेड के वायु संपर्क दल में अग्रिम वायु नियंत्रक के रूप में तैनात थे। वायु संपर्क दल के सदस्य युद्ध-क्षेत्र में ऐसे खास-खास ठिकानों पर मोर्चा जमाते हैं जहां से वे दुश्मन के लक्ष्यों को भली-भांति देख सकें और आक्रमण के लिए भेजे जाने वाले वायुयानों के पायलटों को सही लक्ष्यों तक पहुंच पाने के लिए उनका रेडियो से मार्ग-दर्शन कर सकें। 5 दिसंबर, 1971 को थलसेना का एक गश्ती प्लाटून दुश्मन के तोपखाने, मार्टर और मशीन गन की भारी गोलाबारी में फंस गया। इस दस्ते की सहायता के लिए तुरंत सैनिकों की एक कंपनी भेजी गई और फ्लाइट लेफ्टिनेंट राव को उसके साथ जाने के लिए कहा गया। वे ऊंट पर सवार हो कर तुरंत उस क्षेत्र में पहुंचे और एक ऊंचे रेत के टीले पर, जो शत्रु की गोलाबारी की हद में था, मोर्चा जमाया और वहां से वे शत्रु के ठिकानों तक पहुंचने के लिए अपने वायुयानों का मार्ग-दर्शन करते रहे। फिर 7 दिसंबर, 1971 को जब एक अन्य कंपनी ने, जिस पर शत्रु ने भारी गोलाबारी शुरू कर दी थी, 17—15 बजे शत्रु पर हवाई हमला करने की मांग की तो फ्लाइट लेफ्टिनेंट राव ने स्वेच्छा से मौके पर जाकर अग्रिम वायु नियंत्रक का काम संभालना स्वीकार किया हालांकि उनको मालूम था कि सैदान, रेगिस्तान के पार 52 किलोमीटर दूर है, जिसमें से 12 किलोमीटर शत्रु के इलाके में से गुजरना पड़ेगा और उस समय तक दोपहर के 12 बज चुके थे। वे 14—00 बजे सड़क के अंतिम छोर पर पहुंच गए और वहां अपने दस्ते को संगठित करने के बाद अपना रेडियो सेट एक ऊंट पर लादकर स्वयं उसका नेतृत्व करने लगे। वे समय पर सफलतापूर्वक सैदान पहुंच गए, वहां से बड़ी कामयाबी से हवाई हमले का निर्देशन किया और 11 दिसंबर, 1971 को बटालियन मुख्यालय लौट आए। 14 दिसंबर, 1971 को सैदान की हमारी चौकी को 10—00 बजे के करीब शत्रु की एक बटालियन सेना ने घेर लिया और 14—00

बजते-बजते उस पर शत्रु का भारी दबाव बढ़ने लगा। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट राव ने फिर एक बार घेरा डालने वाली शत्रु की फौज के विरुद्ध हवाई हमले का निर्देश करने के लिए स्वेच्छा से अपनी सेवाएं अर्पित कीं। वे एक जीप में अपने रेडियो सेट के साथ बटालियन मुख्यालय से रवाना हुए और एक कंपनी के एक गश्ती दस्ते के साथ संपर्क स्थापित करने के बाद शत्रु से घिरे हुए सैक्टर के मोर्चे पर जा पहुंचे। शत्रु के हमले को नाकाम बना दिया गया परन्तु रात को उसने फिर हमले की तैयारी कर ली। 15 दिसंबर, 1971 को 08-30 बजे शत्रु पर हवाई हमला करने की मांग की गई, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट राव ने बड़ी कुशलता से उस हवाई हमले को निर्देशन किया जिसके परिणामस्वरूप शत्रु पीछे हटने को मजबूर हो गया और उसे जान-माल की भारी हानि उठानी पड़ी।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विस्टन रविन्दर संजीव राव ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

40. फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट योगेन्द्र प्रसाद सिंह (9867), फ्लाइंग (नेविगेटर)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट योगेन्द्र प्रसाद सिंह ने कई रात शत्रु के इलाके में काफी अंदर स्थित महत्वपूर्ण लक्ष्यों पर बमबारी करने के लिए किए गए हवाई हमलों के दौरान, शत्रु के भारी प्रतिरोध के बावजूद, दुर्गम एवं अनजाने क्षेत्र में अपने बमबार वायुयानों के मार्ग-निर्देशन में उच्चकोटि की दिक्चालन कुशलता का परिचय दिया। अन्य वायु कर्मियों के लिए वे प्रेरणा का स्रोत बने रहे।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट योगेन्द्र प्रसाद सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, नेतृत्व और व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया।

41. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कुलदीप सिंह सहोता (9848), फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कुलदीप सिंह सहोता ने, लड़ाकू बमवर्षक स्क्वाड्रन में एक पायलट के रूप में, हमारी थल-सेनाओं की सहायता के लिए 13 उड़ानें भरीं। उन्होंने शत्रु के चार टैंक और कुछ भारी तोपें नष्ट कीं। दो अवसरों पर, छम्ब-जोरिया क्षेत्र में शत्रु के टैंकों के जमाव के बारे में वे जो सूचना लाए उससे बाद में किए जाने वाले हमलों की योजना बना कर उन टैंकों को नष्ट करने में सहायता मिली।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कुलदीप सिंह सहोता ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

42. फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट सुकृतराज जयन्द्र (8423), फ्लाइंग (पायलट),

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुकृतराज जयन्द्र पूर्वी क्षेत्र में एक लड़ाकू बमवर्षक स्क्वाड्रन में सेवारत थे। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुकृतराज जयन्द्र, तेज-गांध हवाई अड्डे को जाने वाले चार वायुयानों के फार्मेशन के दो अनुरक्षी वायुयानों की फार्मेशन में नंबर दो थे। इस फार्मेशन पर जब एफ-86 सैबर जेटों ने आक्रमण किया तब उन्होंने शत्रु के एक वायुयान को उलझाया और उसे गोली मार कर नीचे गिरा दिया।

इस कार्यवाही में फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट सुकृतराज जयन्द्र ने उच्च-कोटि की वीरता, दृढ़-संकल्प और व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया।

43. फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट राय एण्ड्रयू मैंसी (8428), फ्लाइंग (पायलट)

22 नवंबर, 1971 को 14-50 बजे पश्चिम बंगाल में बोयरा के निकट हमारी सीमा में घुसपैठ करने वाले चार पाकिस्तानी वायुयानों को बीच में ही रोकने का आदेश दिया गया। फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट राय एण्ड्रयू मैंसी, जो चार नैट वायुयानों की फार्मेशन का नेतृत्व कर रहे थे, उन्हें रोकने के लिए आगे बढ़े। उन्होंने बड़ी चतुराई से अपने सेक्शन से मोर्चाबंदी की, एक सैबर जैट के पीछे जा पहुंचे और उसे मार गिराया। उनके सही अंदाज और फार्मेशन के चतुर फार्मेशन के फलस्वरूप दो और सैबर जैटों को मार गिराया गया। यह सुनिश्चित करने के बाद कि अब कोई और घुसपैठिया हमारी सीमा में नहीं रहा, वह अपनी फार्मेशन को सुरक्षित लौटा लाए।

इस आक्रमण के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट राय एण्ड्रयू मैंसी ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया।

44. फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट प्रेम भूषण कालरा (8466), फ्लाइंग (नेवीगेटर)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रेम भूषण कालरा ने 6 बमवर्षक उड़ानों में भाग लिया। प्रत्येक उड़ान के दौरान, वे जमीनी गोलाबारी के ठिकानों को ढूंढ निकालने और उन पर जबाबी हमले करने में सहायक हुए। यद्यपि उनके वायुयान पर तीन अवसरों पर गोली लगी फिर भी उन्होंने अपनी उड़ानें जारी रखीं। 15 दिसंबर, 1971 को, उन्होंने शत्रु सीमा में काफी अन्दर तक उड़ानें भरीं। ढलती सांझ और कम दृश्यता के कारण वायुयान का मार्ग-निर्देशन अत्यंत कठिन हो गया था लेकिन फिर भी उन्होंने ठिकाने पर पहुंच कर बमबारी की।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रेम भूषण कालरा ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

45. फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट नीरज कुकरेजा (8733), फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट नीरज कुकरेजा एक लड़ाकू स्क्वाड्रन में सेवारत थे। 17 दिसंबर, 1971 को जब वे एक बमवर्षक टुकड़ी की अनुरक्षी फार्मेशन का नेतृत्व कर रहे थे, उन्हें शत्रु के दो एफ-104 वायुयान दिखाई पड़े जो प्रहारक टुकड़ी को सीधी चोट पहुंचा सकते थे। उन्होंने अपने नंबर दो को सचेत किया और बमवर्षक टुकड़ी के नेता को भी सूचित किया कि वे शत्रु के वायुयान से टक्कर लेने जा रहे हैं। उन्होंने चतुराई से अपने वायुयान का पैंतरा बदला

और शत्रु के वायुयानों में से एक के पीछे पहुंच गए। थोड़ी देर तक वायु युद्ध करने के बाद, उन्होंने अपने दोनों मिसाइल छोड़ दिए जिसके परिणामस्वरूप शत्रु के वायुयान में आग लग गई और वह टूट कर गिर गया।

इस कार्यवाही में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट नीरज कुकरेजा ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

46. फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट चिदाम्बरन सारंगपाणि चन्द्रशेखरन (8768),
फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेंन्ट चिदाम्बरन सारंगपाणि चन्द्रशेखरन एक लड़ाकू बमवर्षक में पायलट थे। उन्होंने शत्रु की थल सेनाओं के विरुद्ध 13 संक्रियात्मक उड़ानें भरीं और भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद भी उन्होंने शत्रु के 8 टैंक, 2 तोपें और एक बंकर को नष्ट किया।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चिदाम्बरन सारंगपाणि चन्द्रशेखरन ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

47. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चैरी हासानन्द राणे (8782)
फ्लाइंग (पायलट)

4 दिसंबर, 1971 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चैरी हासानन्द राणे ने हुसैनीवाला पर एक हमले का नेतृत्व किया और शत्रु का एक टैंक नष्ट कर दिया। शत्रु की हवाई और जमीनी गोलाबारी के बावजूद भी उन्होंने शत्रु के इलाके पर कई हमलावर उड़ानों का नेतृत्व किया। उनके हमलों का छम्ब-जोरियां क्षेत्र में शत्रु की थल सेनाओं पर घातक प्रभाव पड़ा। उन्होंने शत्रु सेनाओं और बख्तरों के जमावों पर घातक हमले करने के अलावा, उसके चार टैंक और चार गाड़ियां नष्ट कीं। 17 दिसंबर, 1971 को उन्होंने लाहौर के रेल-जंक्शन पर एक हमला किया और उसे भारी क्षति पहुंचाई।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चैरी हासानन्द राणे ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

48. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट दिनेश चन्दर नय्यर (8995),
फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट दिनेश चन्दर नय्यर पूर्वी क्षेत्र में एक लड़ाकू बमबार स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे थे। युद्ध के दौरान, उन्होंने हमलों के लिए 11 उड़ानें कीं। ढाका हवाई अड्डे पर उनके पहले हवाई हमले में उन पर विमान-भेदी तोपों द्वारा गोलाबारी की गई। अपने प्राणों की चिन्ता किए बिना, भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद उन्होंने अपने हमले जारी रखे और हवाई अड्डे की तोपों के मुंह बंद कर दिए और साथ ही जमीन पर खड़े शत्रु के एक सैबर वायुयान को भी बरबाद कर दिया। बाद की एक उड़ान में, उन्हें शत्रु के एक छिपे तेल-डिपो का पता लगा और उन्होंने इसे भी नष्ट कर दिया।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट दिनेश चन्दर नय्यर ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

49. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रोबिन्द्र कुमार सिन्हा (9032)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान एक लड़ाकू बमबार स्क्वाड्रन के पायलट के रूप में, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रोबिन्द्र कुमार सिन्हा ने कई संक्रियात्मक उड़ानें भरी। इन में से कुछ तो शत्रु के इलाके के काफी अन्दर फोटो/नजरी टोह के लिए थीं। इनके हमलावर मिशनों में इनके द्वारा लाई गई खबरों से बाद के हमलावर मिशनों की योजना बनाने में बड़ी सहायता मिली और शत्रु के लक्ष्यों को सफलतापूर्वक नष्ट किया जा सका। उन्होंने छम्ब-जोड़ियां क्षेत्र में भी हमारी थल सेनाओं के निकट सहायता के लिए अनेक उड़ानें भरीं, और शत्रु की भारी जमीनी गोलाबारी तथा उसकी वायुसेना के भारी अवरोध के बावजूद भी उन्होंने शत्रु के चार टैंक और कई मोटर-गाड़ियां बरबाद कर दीं।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रोबिन्द्र कुमार सिन्हा ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

50. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अरुण वसन्त साठये (9039)
फ्लाइंग (पायलट)

4 दिसंबर, 1971 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अरुण वसन्त साठये को एक लड़ाकू बमबार स्क्वाड्रन के वरिष्ठ पायलट के नाते चार विमानों के हमलावर मिशन में एक हवाई अड्डे पर हमला करने के लिए भेजा गया। भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद भी उन्होंने सफलतापूर्वक हमले किए। अपने पहले हमले के दौरान उन्होंने एक इमारत नष्ट कर दी। लौटते हुए, उन्होंने पास ही में एक वायुयान को खड़ा देखा। उस समय, शत्रु के उस बमबार वायुयान में पैट्रोल भरा जा रहा था। उन्होंने तुरंत दूसरा हमला कर दिया। हमले के बाद, उन्होंने उस वायुयान के पास भारी लपटें और धुएं के गुबार ऊपर उठते देखे।

इस कार्यवाही में, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अरुण वसन्त साठये ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

51. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अरुण लक्ष्मण देवास्कर (9058)
फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अरुण लक्ष्मण देवास्कर एक लड़ाकू बमबार स्क्वाड्रन में पायलट थे। वे शत्रु के इलाके में बहुत अंदर स्थित एक हवाई अड्डे पर दिन में हमला करने गए और शत्रु की भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद, शत्रु के दो वायुयानों को जमीन पर ही नष्ट कर दिया। इससे पहले भी एक बार उन्होंने शत्रु के एक हवाई अड्डे पर हमला करके उसके संस्थापनों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। इस मिशन से लौटते समय उन पर शत्रु के एक अधिक शक्तिशाली वायुयान ने हमला कर दिया। हालांकि इस भिड़न्त में उनका वायुयान क्षतिग्रस्त हो गया, फिर भी वे उसे अड्डे पर सुरक्षित लौटा लाए।

आद्योपान्त, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अरुण लक्ष्मण देवास्कर ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

52. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट असपारी रघुनाथ (9122), फ्लाइंग (नेवीगेटर)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट असपारी रघुनाथ एक बमबार स्क्वाड्रन में तैनात थे। उन्होंने प्रत्येक उड़ान और मिशन के लिए स्वयं को स्वेच्छा से प्रस्तुत किया। उनकी लगन और योग्यता के कारण ही उन्हें एक विशेष कार्य सौंपा गया जिसको उन्होंने शत्रु की विमान भेदी तोपों की गोलाबारी और हवाई सुरक्षा की पूरी व्यवस्था के बावजूद भी सफलतापूर्वक पूरा किया।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट असपारी रघुनाथ ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

53. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट भारत भूषण सोनी (9392) फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट भारत भूषण सोनी एक बमबार स्क्वाड्रन में तैनात थे। एक हवाई अड्डे पर शत्रु के हवाई हमले के दौरान उन्होंने उड़ान भरी और शत्रु के एक एफ-104 वायुयान से भिड़ गए। उन्होंने अपना वायुयान काफी निचाई पर, ध्वनि से भी तेज गति से उड़ाया और शत्रु के वायुयान को मार गिराया।

आद्योपान्त फ्लाइट लेटिफ्लेन्ट भारत भूषण सोनी ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

54. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट समर विक्रम शाह (9413) फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट समर विक्रम शाह एक लड़ाकू बमवार स्क्वाड्रन की टुकड़ी में तैनात थे। 16 दिसंबर, 1971 को उन्हें एक आक्रामक स्वीप मिशन की रक्षार्थ तैनात किया गया। अनुरक्षी दल के नेता के रूप में, उन्होंने आक्रामक स्वीप मिशन के कार्य की पूर्ति में भरपूर सहायता दी। अड्डे पर वापस लौटते समय उन्होंने शत्रु के वायुयानों की एक टुकड़ी को हमारे वायुयानों की ओर बढ़ते हुए देखा। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट समर विक्रम शाह ने तुरंत शत्रु के वायुयानों को लड़ाई में उलझा लिया, और बाद के वायु युद्ध में शत्रु फार्मेशन के नेता के वायुयान को गोली मार कर गिरा दिया। ईंधन की कमी के कारण वे शत्रु के दूसरे वायुयान का पीछा नहीं कर सके। इस कठिनाई के बावजूद उन्होंने शत्रु के दूसरे वायुयान के प्रयत्नों को विफल कर दिया और अपने वायुयान को सही सलामत उतार लिया।

इस कार्यवाही में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट समर विक्रम शाह ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

55. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट हेमन्त शरत कुमार सरदेसाई (9463) फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट हेमन्त शरत कुमार सरदेसाई पूर्वी क्षेत्र में एक लड़ाकू स्क्वाड्रन में तैनात थे। 3 दिसंबर, से 16 दिसंबर 1971 तक, उन्होंने जवाबी हवाई हमले के लिए 11 उड़ानें, आक्रामक हवाई सहायता के लिए 8 उड़ानें और हवाई रक्षार्थ 3 उड़ानें भरीं। एक आक्रामक सहायता मिशन के दौरान, उन्होंने राजिन्दरगंज और महेन्दरगंज के बीच दुश्मन के छिपे मुख्यालय बंकरों की टोह लगाई और बाद में उस पर आक्रमण का निर्देशन किया जिसकी वजह से दुश्मन के मुख्यालय और उसके लगभग 160 कार्मिकों को कब्जे में किया जा सका। 6 दिसंबर, 1971 को वे तेजगांव हवाई अड्डे पर बम वर्षा करने वाली स्क्वाड्रन की पहली टुकड़ी में थे, जिससे वह हवाई अड्डा बेकार हो गया। 12 दिसंबर, 1971 की रात को इन्होंने नरसिंगदी में शत्रु के एक गुप्त हवाई अड्डे पर आक्रमण किया और फिर अगले दिन, उस पर दिन में भी बमबारी की और हवाई अड्डे को बेकार कर दिया। ये उस फार्मेशन में थे जिसने 14 दिसंबर, 1971 को ढाका में शत्रु के एक महत्वपूर्ण सैनिक अड्डे पर आक्रमण किया था। ये उस पहली फार्मेशन में भी थे जिसने ढाका में शत्रु सैनिकों के भारी जमावों पर हमला किया जिसके कारण पाकिस्तानी सेना को बंगलादेश में और भी जल्दी आत्म-समर्पण करना पड़ा।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट हेमन्त शरत कुमार सरदेसाई ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

56. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मांडेपंडा अप्पाचू गणपथि (9464) फ्लाइंग (पायलट)

22 नवंबर, 1971 को 14-50 बजे, चार पाकिस्तानी वायुयानों को, जो हमारी सीमा में घुस आए थे, बीच में ही रोक लेने का आदेश दिया गया। 4 नैट वायुयानों की एक फार्मेशन को जिसमें फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मांडेपंडा अप्पाचू गणपथि नं० 3 थे, शत्रु के वायुयानों को रोकने के लिए भेजा गया। शत्रु के वायुयानों को देखते ही, उन्होंने कुशलतापूर्वक अपनी टुकड़ी का परिचालन किया और स्वयं एक सैबर जेट के पीछे पहुंच कर, उसे मार गिराया।

इस कार्यवाही में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मांडेपंडा अप्पाचू गणपथि ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

57. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अशोक कुमार सिंह (9481), फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अशोक कुमार सिंह ने, लड़ाकू बमवर्षक स्क्वाड्रन के एक पायलट के रूप में, शत्रु के कड़े जमीनी और हवाई मुकाबले के बावजूद उसके क्षेत्र में काफी भीतर तक 15 उड़ानें भरीं। 17 दिसंबर, 1971 को उन्हें फोटो-टोह उड़ान का कार्यभार सौंपा गया जिसके लिए उन्हे बहुत लंबी उड़ान भरनी थी और उधर शत्रु ने लक्ष्य की रक्षा का भी भारी प्रबंध कर रखा था। लक्ष्य के ऊपर पहुंचने पर उनके विमान को शत्रु की विमान भेदी तोपों की गोलाबारी से क्षति पहुंची जिससे उनके वायुयान की ईंधन की टंकी रिसने लगी। परन्तु उन्होंने अविचलित अपनी सुरक्षा की तनिक भी चिन्ता किए बिना अपना कार्य पूरा किया और ईंधन टंकी की हालत नाजुक होते हुए भी वे अपने अड्डे पर सुरक्षित उतरे और साथ बहुत ही महत्वपूर्ण सूचनाएं भी लाए।

इस कार्यवाही के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अशोक कुमार सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

58. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जगदंबा प्रसाद सकलानी (9554), फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जगदंबा प्रसाद सकलानी ने एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन के पायलट के रूप में हमारी थल सेनाओं की सहायता के लिए 13 संक्रियात्मक उड़ानें भरीं। चार टैंकों और एक जीप को नष्ट करने के अतिरिक्त, उन्होंने एक हवाई अड्डे पर हमला किया, शत्रु की सेनाओं और टैंकों के जमावों पर बमबारी की और एक अन्य इलाके पर भी बमबारी कर शत्रु को भारी नुकसान पहुंचाया।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जगदंबा प्रसाद सकलानी ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

59. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अरुण कुमार दत्ता (9738), फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अरुण कुमार दत्ता एक लड़ाकू स्क्वाड्रन की टुकड़ी में कार्य कर रहे थे। इस दौरान, उन्होंने अनेक संक्रियात्मक उड़ानें भरीं। 12 दिसंबर, 1971 को जब वे हमारे प्रहारक वायुयानों की रक्षार्थ उड़ान भर रहे थे, तो उनके मिशन के नेता ने शत्रु के दो एफ–104 वायुयान देखे। ये वायुयान हमारे प्रहारक वायुयानों के लिए सीधा खतरा बन रहे थे। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट दत्ता और मिशन के नेता ने तुरंत शत्रु के दोनों वायुयानों को लड़ाई में उलझा लिया। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट दत्ता शत्रु के एक वायुयान के पीछे जा पहुंचे परन्तु उसके पायलट ने कलाबाजी खा कर बच निकलने की कोशिश की। बड़ी होशियारी से, वे अपने वायुयान को फिर शत्रु के वायुयान के पीछे लाए और अपने दोनों मिसाइल 3–4 सैकिंड के अंतर से फायर करके, शत्रु के वायुयान को नष्ट कर दिया।

इस कार्यवाही में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अरुण कुमार दत्ता ने उच्च-कोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

60. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट दिलीप कमलाकर दिघे (9745), फ्लाइंग (पायलट)

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट दिलीप कमलाकर दिघे दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन में पायलट थे। इस दौरान, इन्होंने हमारी थल सेनाओं की सहायता के लिए 14 उड़ानें भरीं। इन में से दो उड़ानों में उन्होंने शत्रु के टैंकों के जमाव देखे। वे तुरंत फार्मेशन को लक्ष्य की ओर ले गए। इन्होंने अपने निशाने से छम्ब-जोड़िया क्षेत्र में शत्रु के चार टैंकों, अनेक मोटर गाड़ियों और दो तोपखानों को नष्ट किया।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट दिलीप कमलाकर दिघे ने उच्च-कोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

61. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट पार्थ दास गुप्त (9770), फ्लाइंग (पायलट)

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट पार्थ दास गुप्त, दिसंबर, 1971 में पाकि-स्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन में काम कर रहे थे। इस दौरान, इन्होंने 19 संक्रियात्मक उड़ानें कीं जिनमें से 12 तो शत्रु के इलाके में काफी अन्दर स्थित इलाकों पर की गईं। 5 दिसंबर, 1971 को चिश्तियां मंडी बहावल नगर के इलाके में सामरिक टोह और हमले की उड़ान के दौरान नम्बर 2 के रूप में उन्होंने चिश्तियां मंडी के पास टैंक ले जाती एक रेलगाड़ी देखी। शत्रु की विमान-भेदी तोपों की भारी गोलाबारी के बावजूद, उन्होंने रेलगाड़ी पर दो बार हमले किए और तीन टैंक नष्ट कर दिए। एक और मौके पर मुलतान पर हमले के दौरान वे नंबर 2 थे। इस हमले म उन्होंने मुलतान में तेल का एक विशाल भंडार ध्वस्त कर दिया और अपना वायुयान सही सलामत वापस अड्डे पर ले आए। जब वे अड्डे पर उतरे तो वायुयान की शेष उड़ान-क्षमता केवल तीन मिनट रह गई थी। अन्य उड़ानों में भी वे तब तक अपने काम पर लगे रहे, जब तक वायुयान की उड़ान-क्षमता बिल्कुल समाप्त होने को न आ गई।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट पार्थ दास गुप्त ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

62. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट राजेन्द्र सिंह वाही (9830), फ्लाइंग (पायलट)

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट राजेन्द्र सिंह वाही, दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन में पायलट थे। उन्होंने थल सेना की सहायता में 13 संक्रियात्मक उड़ान भरीं और शत्रु के तीन टैंकों, चार मोटर गाड़ियों, एक तेल भंडार और एक तोपखाने को नष्ट किया। इसके अलावा इन्होंने चन्दर हवाई अड्डे, जफरवाल, डेरा बाबा नानक के पुल और धर्मन गांव में शत्रु के सैनिक जमावों पर भी सफल बममारी की।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट राजेन्द्र सिंह वाही ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

63. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट परवेज रुस्तम जामसजी (9834), फ्लाइंग (पायलट)

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट परवेज रुस्तम जामसजी दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, एक हेलीकाप्टर स्क्वाड्रन में काम कर रहे थे। जिस हेलीकाप्टर को वे उड़ा रहे थे, उस पर दो बार मशीनगन से और दो बार मार्टरों से हमले हुए, फिर भी उन्होंने सौंपा गया काम पूरा किया और हेलीकाप्टर को सही सलामत अड्डे पर वापस ले आए। एक बार जब ये शत्रु के मोर्चों के ऊपर से उड़ रहे थे तो हेलीकाप्टर के इंजन में खराबी पैदा हो गई, फिर भी वे उसे अपने इलाके में सकुशल लौटा लाए।

आद्योपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट परवेज रुस्तम जामसजी ने उच्च-कोटि की वीरता, व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

64. फ्लाइंग अफसर डोनल्ड लजारस (10516), फ्लाइंग (पायलट)

दिसबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइंग अफसर डोनल्ड लजारस एक लड़ाकू स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे थे। 22 नम्बबर, 1971 को 4 नैट वायुयानों की एक फार्मेशन में फ्लाइंग अफसर नजारस को नं० 4 के रूप में उड़ान भरने के लिए भेजा गया। इस फार्मेशन को शत्रु के उन चार वायुयानों को रास्ते में ही रोक लेने का आदेश दिया गया था, जो हमारी सीमा में घुस आए थ। फार्मेशन के नेता ने फार्मेशन को लाभदायक स्थिति पर लाकर घुसपैठिए सैबर जैटों पर अक्रमण कर दिया। इस हवाई युद्ध में, फ्लाइंग अफसर लजारस अपने नेता की सुरक्षा के लिए नं० 4 की स्थिति में बने रहे। जब फ्लाइंग अफसर लजारस ने देखा कि एक सैबर जेट उनके नेता के लिए खतरा बन रहा है तो वे तुरंत अपने वायुयान को बहुत होशियारी से उस सैबर जेट के पीछे ले गए और उस समय तक उस पर आक्रमण करते रहे, जब तक कि आकाश में ही उसके टुकड़े-टुकड़े नहीं हो गए।

इस कार्यवाही में फ्लाइंग अफसर डोनल्ड जलारस ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

65. फ्लाइंग अफसर किशन लखीमल मलकानी (10576), फ्लाइंग (पायलट) **(मरणोपरान्त)**

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइंग अफसर किशन लखीमल मलकानी एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे थे। 4 दिसम्बर, 1971 को उन्हें सूर्यास्त के समय शत्रु के एक हवाई अड्डे पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया। लक्ष पर दृश्यता कम होने के बावजूद, उन्होंने सफलतापूर्वक आक्रमण किया और एक ब्लास्ट पेन को ध्वस्त कर दिया। 5 दिसम्बर, 1971 को, शत्रु की एक सिगनल यूनिट पर आक्रमण करने वाले एक मिशन में उन्हें नं० 2 के रूप में भेजा गया। उन्होंने रेडार यूनिट पर आक्रमण किया और उसको इतनी अधिक क्षति पहुंचाई कि युद्ध के अन्त तक, वह रेडार स्टेशन बेकार रहा। इस संक्रिया में उन्होंने अपने प्राण भी न्योछावर कर दिए।

इस कार्यवाही में फ्लाइंग अफसर किशन लखीमल मलकानी ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

66. फ्लाइंग अफसर बालचन्द्र चेंगप्पा करुम्बाया (10604), फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइंग अफसर बालचन्द्र चेंगप्पा करुम्बाया एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे थे। उन्होंने शत्रु के हवाई अड्डे पर दिन के समय जवाबी हवाई हमलों के लिए दो बार उड़ानें भरीं और शत्रु की भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद, उसके जमीन पर खड़े एक भारी परिवहन वायुयान को नष्ट कर दिया। इसके अलावा, उन्होंने हवाई अड्डे के स्थायी संयंत्रों आदि को भी बहुत क्षति पहुंचाई।

इस कार्यवाही में फ्लाइंग अफसर बालचन्द्र चेंगप्पा करुम्बाया ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

67. फ्लाइंग अफसर शंकरनारायणन बालसुब्रामणियन (10864), फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइंग अफसर शंकरनारायणन बालसुब्रामणियन एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन में एक पायलट के रूप में कार्य कर रहे थे। 4 और 5 दिसम्बर, 1971 को, उन्होंने दिन में शत्रु प्रदेश में काफी भीतर तक घुस कर एक हवाई अड्डे पर हमले के लिए उड़ानें भरीं और भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद, हवाई अड्डे और इसके संयंत्रों आदि को भारी क्षति पहुंचाई।

इस कार्यवाही में फ्लाइंग अफसर शंकरनारायणन बालसुब्रामणियन ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

68. फ्लाइंग अफसर बर्टन रमेश (10948),
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइंग अफसर बर्टन रमेश एक हैलिकाप्टर यूनिट में कार्य कर रहे थे । उन्होंने 45 संक्रियात्मक उड़ानें सफलतापूर्वक सम्पन्न कीं, जिनमें से कुछ तो युद्ध क्षेत्र के ठीक बीच में । इनमें से दो उड़ानों में उन्होंने शत्रु की लगातार बममारी के बावजूद, अपनी जान हथेली पर रख कर, उड़ी क्षेत्र के अग्रवर्ती हेलिपैड से हताहत सैनिकों को बाहर निकाला ।

आद्योपान्त फ्लाइंग अफसर बर्टन रमेश ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

69. फ्लाइंग अफसर हरीश मसंद (11272),
फ्लाइंग (पायलट)

4 दिसम्बर, 1971 को फ्लाइंग अफसर हरीश मसंद शत्रु के एक हवाई अड्डे पर आक्रमण करने के लिए भेजे गए तीन वायुयानों के एक मिशन में नं० 3 थे । लक्ष्य से थोड़ी सी ही दूरी पर उनकी फार्मेशन को पाकिस्तानी वायुसेना के दो सैबर वायुयानों ने रास्ते में ही रोक लिया । बाद के वायु युद्ध में उन्होंने एक सैबर जैट को मार गिराया । उन्होंने शत्रु प्रदेश के ऊपर भी कई लड़ाकू टोह उड़ानें भरीं और उन्हें जो भी कार्य सौंपा गया, उसे उन्होंने पूरा किया ।

आद्योपान्त फ्लाइंग अफसर हरीश मसंद ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

70. फ्लाइंग अफसर जय सिंह गहलावत (11280),
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइंग अफसर जय सिंह गहलावत ने एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन के पायलट के रूप में शत्रु के विरुद्ध कई संक्रियात्मक उड़ाने भरीं । 5 दिसंबर, 1971 को उन्होंने कठुआ क्षेत्र पर हमला किया और एक पुल को उड़ा दिया । 7 दिसंबर, 1971 को एक निकट सहायता उड़ान के दौरान उन्होंने दुश्मन के कई टैंक नष्ट कर दिए । एक उड़ान के दौरान शत्रु की जमीनी गोलाबारी से उनके विमान को क्षति पहुंची परंतु वे उसे सुरक्षित अपने अड्डे पर वापिस ले आए । 9 दिसंबर, 1971 को जब वे दो वायुयानों की एक फार्मेशन के नं० 2 थे तो उनकी फार्मेशन पर शत्रु के 6 मिराज विमानों ने हमला कर दिया । उन्होंने पूरी चौकसी बरतते हुए अपने लीडर को भरपूर संरक्षण और सहायता प्रदान की । यद्यपि शत्रु विमानों ने उन पर वायु से वायु में मार करने वाली 12 मिसाइलें छोड़ीं, तो भी उनकी फार्मेशन सकुशल अपने अड्डे पर लौट आई । 10 दिसंबर को छम्ब क्षेत्र में एक निकट वायु सहायता उड़ान के दौरान, उन्होंने दुश्मन के ठिकानों पर हमला किया और उसे भारी नुकसान पहुंचाया

आद्योपान्त फ्लाइंग अफसर जयसिंह गहलावत ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

71. फ्लाइंग अफसर मोहन दीक्षित (11309),
फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइंग अफसर मोहन दीक्षित ने, एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन के एक पायलट के रूप में कई उड़ानें भरीं । उन्होंने एक हमले के दौरान विंगमैन के रूप में उड़ान भरी और शत्रु की भारी मोर्चेबंदी के बावजूद एक पुल को तोड़ दिया । पठानकोट क्षेत्र में उन्होंने चार मार्शलिंग यार्डों एवं एक नहर मुखरचना को हानि पहुंचाई । छंब क्षेत्र में एक निकट वायु सहायता उड़ान के दौरान उन्होंने कुछ तोपों को ध्वस्त किया ।

आद्योपान्त फ्लाइंग अफसर मोहन दीक्षित ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

72. फ्लाइंग अफसर सुखदेव सिंह ढिल्लों (11378),
फ्लाइंग (पायलट)

दिसंबर, 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान, फ्लाइंग अफसर सुखदेव सिंह ढिल्लों ने एक हेलीकाप्टर यूनिट के पायलट के रूप में उड़ाने भरीं और अपनी सुरक्षा की तनिक भी चिन्ता न करते हुए कारगिल क्षेत्र के एक बहुत ही दुर्गम एवं खतरनाक इलाके से अकेले ही युद्ध में हताहत हुए 87 सैनिकों को निकाल लाए । शत्रु की भारी जमीनी गोलाबारी और हवाई प्रतिरोध के बावजूद भी उन्होंने हताहतों को निकाल कर लाने का काम पूरा किया ।

आद्योपान्त फ्लाइंग अफसर सुखदेव सिंह ढिल्लों ने उच्चकोटि की वीरता, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

पे० ना० कृष्णमणि,
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

विधि और न्याय मंत्रालय

(विधायी विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 5 जून 1972

संकल्प

सं० फा० 10(4)/69–वक्फ––भारत के राजपत्र के भाग I, खण्ड 1 में 23 जनवरी, 1971 को प्रकाशित भारत सरकार, विधि और न्याय मंत्रालय, विधायी विभाग के संकल्प सं० फा० 10(4)/69–वक्फ० दिनांक 9 दिसम्बर, 1970 द्वारा स्थापित वक्फ जांच समिति का कार्यकाल एतद्द्वारा 31 अक्तूबर, 1972 तक विस्तारित किया जाता है ।

एन० श्रीनिवासन, उप-सचिव

कृषि मंत्रालय

(कृषि विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 7 जुलाई 1972

संकल्प

सं० 25-8/68-पशुधन विकास 1—इस मंत्रालय के संकल्प संख्या 25-8/68-पशुधन विकास 1, दिनांक 7 अप्रैल 1972 के आंशिक आशोधन में केन्द्रीय सरकार ने निश्चय किया है कि संकल्प के अनुच्छेद 1 की मद संख्या (6) के समक्ष अवस्थित प्रविष्टि में स्वामी आनन्दजी महाराज, मंत्री, भारत साधु समाज के स्थान पर निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जायेगा :—

"(6) श्री गोस्वामी गिरधारी लाल, प्रधान मंत्री, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब भूपेन्द्र भवन, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55"

त्रिभुवन प्रसाद सिंह, सचिव

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति निम्नलिखित को प्रेषित की जाय :—

1. समस्त राज्य सरकारें/संघ राज्य क्षेत्रों की सरकारें।
2. लोक सभा सचिवालय ।
3. राज्य सभा सचिवालय ।
4. प्रधान मंत्री सचिवालय ।
5. मंत्रिमंडल सचिवालय ।
6. श्री ए० के० सरकार, भारत के सेवा निवृत्त मुख्य न्यायमूर्ति, 67-लोदी एस्टेट, नई दिल्ली-3 ।
7. श्री प्रकाश चन्द्र सेठी, मुख्य मंत्री, मध्य प्रदेश, भोपाल ।
8. श्री एम० करुणानिधि, मुख्य मंत्री, तमिलनाडु, मद्रास ।
9. श्री कमलापति त्रिपाठी, मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश, लखनऊ ।
10. श्री सिद्धार्थ शंकर रे, मुख्य मंत्री, पश्चिम बंगाल, कलकत्ता ।
11. स्वामी आनन्द जी महाराज, मंत्री, भारत साधु समाज, केन्द्रीय आश्रम, 22-सरदार पटेल मार्ग, नई दिल्ली ।
12. श्री गोस्वामी गिरधारी लालजी, प्रधान मंत्री, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब, भुपेन्द्र भवन, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55 ।
13. स्वामी योगेश्वर विदेही हरीजी महाराज, द्वारा भारत गो-सेवक समाज-3-सदर थाना रोड, दिल्ली-6 ।
14. श्री अक्षय कुमार जैन, सम्पादक, नवभारत टाइम्स, बहादुर-शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली ।
15. डा० धर्म नारायण, अध्यक्ष, कृषि मुल्य आयोग, कृषि भवन, नई दिल्ली ।
16. डा० सी० कृष्णा राव, पशुपालन आयुक्त, कृषि विभाग, कृषि भवन, नई दिल्ली ।
17. श्री एच० ए० वी० परपिआ, निदेशक, केन्द्रीय खाद्य टैक्नोलौजिकल अनुसंधान संस्थान, मैसूर ।
18. डा० वी० कुरियन, अध्यक्ष, राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड, आनन्द, गुजरात ।
19. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि भवन, नई दिल्ली ।
20. स्थापना 1, स्थापना 2, स्थापना 3, स्थापना 4, स्थापना 5, लेखा 1 तथा 2 और बजट अनुभाग ।
21. सूचना अधिकारी कृषि विभाग, नई दिल्ली ।

यह आदेश भी दिया जाता है कि संकल्प सामान्य जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये ।

बी० पी० गुलाटी, उप-सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 7 जुलाई 1972

सं० एफ० 10-1/72-फेट—श्री के० ए० कृष्णास्वामी, सदस्य राज्य सभा को राष्ट्रीय खाद्य और कृषि संगठन सम्पर्क समिति के एक सदस्य के रूप में, कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग) के संकल्प संख्या 10-1/65-फेट, दिनांक 9 सितम्बर, 1966 (अद्यतन संशोधित) के अनुसार 26 मई, 1972 से तीन वर्ष की अवधि के लिए निर्वाचित किया गया है ।

अबू हाकिम, निदेशक (विदेशी सहायता)

नई दिल्ली, दिनांक 10 जुलाई 1972

सं० 24-1/72-सा० समन्वय—उच्च स्तरीय समिति स्थापित करने के सम्बन्ध में भारत सरकार कृषि मंत्रालय, कृषि विभाग के संकल्प संख्या 24-1/72-सा० समन्वय, दिनांक 27 जून, 1972 के अनुसरण में, भारत सरकार निम्न प्रकार से समिति के गठन की उद्घोषणा करती है :—

1. श्री बी० सी० गजेन्द्रगड़कर, सेवानिवृत्त, मुख्य न्यायमूर्ति तथा कुलपति, बम्बई विश्वविद्यालय । — अध्यक्ष
2. प्रो० डी० एस० कोठारी, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय, अनुदान आयोग । — सदस्य

3. डा० बी० डी० नागचौधरी, वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा मंत्रालय ।　　सदस्य

4. श्री एच० एन० सेथना, सचिव, अणु ऊर्जा आयोग ।　　सदस्य

5. श्री बी० वेंकटप्पया, अध्यक्ष, ग्राम विद्युतीकरण निगम, नई दिल्ली ।　　सदस्य

समिति स्वयं ही अपनी कार्यविधि निश्चित करेगी, जानकारी आमंत्रित करेगी, साक्षियां एकत्रित करेगी और ऐसी अन्य कार्यवाही करेगी तथा ऐसे अन्य उपाय अपनायेगी जो उसकी सम्मति में, उसे निदेशित प्रश्नों के उपयुक्त अध्ययन करने में उसके सहायक हों। समिति, यदि ऐसा करना आवश्यक समझे तो समुचित शर्तों पर, अध्ययन दल (दलों) अथवा सलाहकारों का पैनल नियुक्त कर सकती है। समिति भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान तथा अन्य ऐसे संस्थानों का, जिन्हें वह आवश्यक समझे, दौरा कर सकती है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति उच्च स्तरीय समिति के अध्यक्ष तथा अन्य सदस्यों, भारत सरकार के समस्त मंत्रालयों। विभागों, प्रधान मंत्री सचिवालय, राष्ट्रपति सचिवालय, योजना आयोग, मंत्रिमंडल सचिवालय, भारत के नियंत्रक तथा महालेखापरीक्षक, समस्त राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्रों के कृषि विभागों के सचिव, कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग) के समस्त संलग्न तथा अधीनस्थ कार्यालयों, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, संसद पुस्तकालय (5 प्रतियां) को प्रेषित की जायें।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प सामान्य जानकारी के लिये भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

दिनांक 11 जुलाई 1972

संख्या एफ० —21–14/72—सामान्य समन्वय— कैप्टन रणन सिंह ने, जिनको इस मंत्रालय की अधिसूचना संख्या 6–30/70—सा०स० दिनांक 7 नवम्बर, 1970 के अनुसार राष्ट्रीय कृषि आयोग का अंशकालिक सदस्य नियुक्त किया गया था, आयोग की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया है। दिनांक 29 मई, 1972 से उनका त्याग-पत्र स्वीकृत होने पर वे राष्ट्रीय कृषि आयोग के अंशकालिक सदस्य नहीं रहे।

का० मु० अहमद, संयुक्त सचिव

शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय

(शिक्षा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 22 जून 1972

संकल्प का संशोधन

विषय :—अखिल भारतीय खेल परिषद् का पुनर्गठन ।

सं० एफ० 1–2/72—वाई०एस०–1(2)— अखिल भारतीय खेल परिषद् को पुनर्गठित करते हुए संकल्प सं० एफ० 1–2/72–वाई० एस० –1(2), दिनांक 13 अप्रैल 1972 में एतद्द्वारा निम्नलिखित शब्द रखे जायें :—

(1) पैरा 4(5) और (6) के स्थान पर निम्नलिखित शब्द रखे जायें :

"(5) लोक सभा से चार सदस्य, लोक सभा के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत किए जायेंगे ।　　4

"(6) राज्य सभा से दो सदस्य, राज्य सभा के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत किए जायेंगे,　　2

(2) पैरा–4 के अंत में "33 आंकड़ों के स्थान पर "36" पढ़ा जाए ।

2. यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प के इस संशोधन की एक प्रतिलिपि सामान्य सूचना के लिए भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित की जाए तथा संबंधित व्यक्तियों को भेजी जाए ।

कांति चौधुरी, संयुक्त सचिव

(समाज कल्याण विभाग)

नई दिल्ली-1, दिनांक 13 जुलाई 1972

संकल्प

संख्या —27/2/70—एन०एस०—इस विभाग के संकल्प संख्या 27/2/70—एन०एस० दिनांक 22 जनवरी, 1972 के आंशिक आशोधन में भारत सरकार श्री एम० एम० राजेन्द्रन, जिन्हें सचिव, श्रम विभाग, नियुक्त किया गया है, के स्थान पर श्री डी० के० ओज़ा, सचिव, समाज कल्याण विभाग, तामिल नाडु सरकार, मद्रास, को इस संकल्प की तारीख से एक वर्ष की अवधि के लिए 'विशेष पोष्टिक आहार कार्यक्रम' सम्बन्धी सलाहकार समिति के एक सदस्य के रूप में नियुक्त करती है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि उक्त संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

पी० पी० आई० वैद्यानाथन, अपर सचिव

डाक-तार बोर्ड

नई दिल्ली, दिनांक 3 जुलाई 1972

संकल्प

सं० 11/2/71—जी० ए०—विभाग द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं तथा उनकी कार्य कुशलता में सुधार संबंधी सर्वदेशीय सामान्य मामलों में डाक-तार विभाग तथा डाक-तार सेवाओं के उपभोक्ताओं के बीच निकट संबंध स्थापित करने की दृष्टि से राष्ट्रपति ने सहर्ष निदेश दिया है कि एक केन्द्रीय डाक-तार सलाहकार

परिषद् का इस प्रकार गठन किया जाए :—

गठन :—

क—**अध्यक्ष**—संचार मंत्री

ख—सरकारी सदस्य :

अध्यक्ष, डाक-तार बोर्ड उपाध्यक्ष,

वरिष्ठ सदस्य (दूरसंचार प्रचालन), डाक-तार बोर्ड

वरिष्ठ सदस्य (वित्त) डाक-तार बोर्ड

वरिष्ठ सदस्य (डाक) डाक-तार बोर्ड

छ: प्रतिनिधि राज्य सरकारों से बारी बारी से ।

डाक-तार सेवाओं के पांच सरकारी प्रमुख उपभोक्ता अर्थात् निम्नवर्ती का एक प्रतिनिधि :–

1. रेलवे बोर्ड
2. रक्षा मंत्रालय
3. आकाशवाणी
4. पत्र सूचना ब्यूरो
5. समुद्रपार सेवाएं

तीन प्रतिनिधि भारत सरकार के उन मंत्रालयों से जो कि डाक-तार के कार्यकलापों से निकट सम्बद्ध हैं, अर्थात् निम्नवर्ती का एक-एक प्रतिनिधि :—

1. परिवहन और जहाजरानी मंत्रालय
2. औद्योगिक विकास एवं आंतरिक व्यापार मंत्रालय
3. परराष्ट्र मंत्रालय

योजना आयोग का एक प्रतिनिधि सदस्य (प्रशासन), डाक-तार बोर्ड

सदस्य सचिव

गैर-सरकारी सदस्य :

संसद् के दस सदस्य (लोक सभा के 6 और राज्य सभा के 4)

एयर लाइन्स के दो प्रतिनिधि अर्थात्

निम्नवर्ती का एक-एक

1. इंडियन एयर लाइन्स
2. एयर इण्डिया

वाणिज्य और उद्योग मंडल के चार-प्रतिनिधि अर्थात् निम्नवर्ती संस्थाओं के अध्यक्ष अथवा उनके नामजद व्यक्ति :—

1. भारतीय वाणिज्य और उद्योग मंडल–संघ
2. भारतीय वाणिज्य तथा उद्योग सहमंडल
3. अखिल भारतीय निर्यात संगठन
4. युवा उद्यमकर्ताओं का राष्ट्रीय संघ

प्रेस एवं भारतीय समाचार एजेंसियों के पांच प्रतिनिधि अर्थात् निम्नवर्ती का एक-एक :—

1. प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया
2. अखिल भारतीय समाचार पत्र संपादन सम्मेलन
3. भारतीय श्रमजीवी पत्रकार संघ
4. यूनाइटेड न्यूज आफ इण्डिया
5. हिन्दुस्तान समाचार

फिलैटली क्षेत्र का एक प्रतिनिधि डाक-तार कर्मचारी संघों के दो प्रतिनिधि अर्थात् डाक-तार कर्मचारी राष्ट्रीय संघ तथा राष्ट्रीय डाक-तार संगठन का राष्ट्रीय संघ का एक-एक प्रतिनिधि ।

अध्यक्ष के स्वविवेक से तीन नामजद प्रतिनिधि ।

कार्यविधि—

2. गैर-सरकारी सदस्य कार्यविधि के पहले वर्ष की 1 जनवरी से 2 वर्ष तक रहेंगे ।

सदस्यता की समाप्ति—

3. गैर-सरकारी सदस्य की सदस्यता इस प्रकार समाप्त की जा सकती है—

1. जिस संगठन की ओर से उसे नामांकित किया हो यदि वह उसका प्रतिनिधि न रहे ।

2. अध्यक्ष द्वारा किसी अन्य कारण से

कार्यकलाप—

4. (क) निम्नवर्ती विषयों से संबंधित कार्यों पर परिषद् विचार करेगी तथा उनके बारे में सिफारिश करेगी :

1. डाक-तार विभाग द्वारा प्रदान की जाने वाली ऐसी सेवाओं तथा सुविधाओं के बारे में जो कि अध्यक्ष द्वारा परिषद् के विचारार्थ भेजी गई हों;

2. डाक-तार विभाग द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं तथा सुविधाओं जिन्हें अध्यक्ष के अनुमोदन से सदस्य व्यक्तिगत रूप में कार्य-सूची में शामिल कराना चाहें ;

3. मौजूदा प्रायोजनाओं का विस्तार तथा सुधार ।

4. डाक-तार विभाग से सम्बन्धित सार्वजनिक हित तथा सुविधा का अन्य कोई और मामला ।

(ख) इस संकल्प के अन्तर्गत स्थापित परिषद् का स्वरूप सर्वदा परामर्शदात्री होगा ।

(ग) स्टाफ अनुशासन तथा नियुक्तियों से सम्बन्धित प्रश्नों को परिषद के सामने नहीं उठाया जाएगा ।

कार्य के नियम

5(क) परिषद की वर्ष में कम से कम एक बार बैठक होगी।

(ख) डाक तार विभाग द्वारा प्रदान कराई जाने वाली सुविधाओं तथा सेवाओं से सम्बन्धित विशेष समस्याओं पर सरकार को परामर्श देने के लिए , अध्यक्ष परिषद् की समितियों या उप-समितियों का गठन कर सकते हैं ।

(ग) जो सदस्य यदि चर्चा के लिए किसी विषय को प्रस्तुत करना चाहे तो उनको एक महीने का नोटिस सचिव को देना चाहिए और जिस विषय पर चर्चा करनी है उस का संक्षिप्त उल्लेख करना चाहिए । सचिव सदस्यों को कम से कम दस दिन का नोटिस देकर कार्य सूची भेजेंगे और जहां तक सम्भव हो वे प्रत्येक मद पर ज्ञापन भी उपलब्ध करायेंगे । महत्वपूर्ण विषय को विचारार्थ परिषद के समक्ष बिना नोटिस के प्रस्तुत किया जा सकता है किन्तु अध्यक्ष, के अनुमोदन से अध्यक्ष स्वनिर्णय के अन्तर्गत कि विषय को वर्जित कर सकते हैं ।

(घ) परिषद की बैठक कार्यवृत्त की एक प्रति प्रत्येक सदस्य को दी जाएगी और दो प्रतियां संसद के पुस्तकालय में रखी जाएंगी। सर्किल अध्यक्षों को भी प्रतियां सप्लाई की जाएगी।

(ङ) बैठकों की कार्यवाही गोपनीय होगी किन्तु साधारणतया कार्यवाही का संक्षिप्त सार तैयार करके प्रैस को दिया जाएगा।

यात्रा भत्ता—

6. परिषद की बैठकों में शामिल होने के लिए गैर-सरकारी सदस्यों को समय समय पर सरकार द्वारा नियत दरों के हिसाब से यात्रा भत्ता तथा दैनिक भत्ता दिया जाएगा।

आदेश दिया जाता है कि आम जानकारी के लिए इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए। यह भी आदेश दिया जाता है कि उपर्युक्त संकल्प की प्रति निम्नांकित को प्रेषित की जाए :—

1. परिषद के अध्यक्ष, अन्य सदस्य तथा सदस्य संगठन।
2. सभी सर्किलों तथा प्रशासनिक कार्यालयों के अध्यक्ष।
3. डाक-तार महालेखा दिल्ली तथा सभी निदेशक-उपनिदेशक डाक-तार लेखा तथा लेखा परीक्षा।
4. डाक-तार निदेशालय के सभी अधिकारी/अनुभाग।

ह० अपठनीय

सदस्य प्रशासन/ तथा भारत सरकार के पदेन, संयुक्त सचिव

नौवहन तथा परिवहन मन्त्रालय

(परिवहन पक्ष)

नई दिल्ली, दिनांक 23 जून 1972

संकल्प

सं० 24-टी० (38)/72—राष्ट्रीयकृत मार्गों पर राज्य परिवहन सेवाओं के चालू करने और सड़क परिवहन के देशीकरण की प्रक्रिया के सरलीकरण को स्थगित रखते हुए निजी चालकों को अस्थायी परमिट देने की व्यवस्था करने के लिए बिहार तथा राजस्थान सरकारों ने मोटरगाड़ी अधिनियम, 1939 में कुछ संशोधन करने का सुझाव दिया था। सड़क परिवहन संबंधी परिवहन विकास परिषद् की स्थायी समिति ने इन सुझावों पर विचार किया था और यह फैसला किया गया कि प्रस्तावों पर विस्तार पूर्वक विचार करने के लिए कुछ राज्यों, विधि तथा न्याय और नौवहन तथा परिवहन केन्द्रीय मंत्रालयों के कुछ अधिकारियों की समिति बनायी जाए। भारत सरकार ने यह सिफारिश स्वीकार कर ली है और उसने निम्नलिखित समिति की स्थापना की है।

2. समिति का गठन निम्न प्रकार से होगा :—

(1)	श्री के० शिवराज, संयुक्त सचिव नौवहन तथा परिवहन मंत्रालय।	अध्यक्ष
(2)	संघ विधि तथा न्याय मंत्रालय का एक प्रतिनिधि।	सदस्य
(3)	असम सरकार का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(4)	मध्य प्रदेश सरकार का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(5)	बिहार सरकार का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(6)	मैसूर सरकार का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(7)	राजस्थान सरकार का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(8)	पश्चिम बंगाल सरकार का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(9)	दिल्ली प्रशासन का एक प्रतिनिधि	सदस्य

(3) समिति के विचारार्थ विषय निम्न प्रकार से होंगे :—

(1) मोटर गाड़ी अधिनियम, 1939 के अन्तर्गत सड़क परिवहन के राष्ट्रीयकरण से सम्बन्धित मौजूदा प्रक्रियाओं का अध्ययन करके उन में परिवर्तनों की सिफारिश करना ताकि उक्त राष्ट्रीयकरण शीघ्र हो जाए।

(2) सड़क परिवहन के राष्ट्रीयकरण की परियोजना के अन्तिम रूप से प्रकाशित किये जाने के बाद इसके कार्यान्वयन के लिए रखी जाने वाली समय सीमा का सुझाव देना और उन मामलों में होने वाले परिणाम, जहां निर्धारित समय के अन्दर परियोजना कार्यान्वित नहीं की जाती।

(3) राज्य परिवहन सेवाओं को चालू करने के काम को स्थगित रखते हुए, अधिसूचित मार्गों के संबंध में निजी चालकों को दिये जाने वाले अस्थायी परमिटों के लिए अधिकतम अवधि निर्दिष्ट करना।

(4) मोटर गाड़ी अधिनियम के संशोधनार्थ उड़ीसा सरकार द्वारा किये गए निम्नलिखित प्रस्तावों की जांच करके रिपोर्ट देना:—

(क) 24, 29 तथा 31 धाराओं में संशोधन द्वारा मूल रजिस्टर करने वाले प्राधिकारी से उस व्यक्ति के लिए "अनापत्ति पत्र" प्राप्त करना आवश्यक होगा जो कि दूसरे व्यक्ति के नाम अपनी मोटर गाड़ी के हस्तान्तरण के लिए अनुरोध करता है और उन व्यक्तियों की पहचान, जोकि उक्त अन्तरण के लिए निवेदन करते हैं और वे जिनके नाम यह अन्तरण किया जाना है, इलाके के दो जिम्मेदार व्यक्तियों या राजपत्रित अधिकारियों द्वारा रजिस्ट्री प्राधिकारी के सामने की जाए।

(ख) एक सामान्य शर्त का उल्लेख करने के लिए धारा 59 का संशोधन होगा कि परमिट धारक गाड़ी कर, यात्री कर, माल कर की सभी बकाया रकम अदा करेगा और अपनी गाड़ी में कर अदा किये जा चुकने संबंधी प्रमाण-पत्र रखेगा।

(ग) परमिटों को रद्द करने के लिए अधीनस्थ अधिकारियों को शक्तियां प्रदान करने हेतु धारा 60 (2ए) का संशोधन और उपयुक्त राशि के संग्रह के लिए अपराधों का फैसला करने हेतु ऐसे अधिकारियों को योग्य बनाना।

(घ) धारा 123 में संशोधन करना ताकि प्रज्ञेय सीमा से अधिक यात्री और माल ले जाने वाली गाड़ियों को अपराधी घोषित किया जा सके और निविष्ट की जाने वाली एक नई उप-धारा के अन्तर्गत ऐसे अपराधों को लाना ताकि पहले अपराध के लिए अधिक से अधिक 500/— रुपये और बाद के किसी अपराध के लिए 1,000/— रुपये तक का जुर्माना किया जा सकेगा

और रजिस्ट्री प्रमाण-पत्र तथा गाड़ी के परमिट का पहले अपराध के लिए भी चार महीने तक की कम से कम अवधि के लिए विलम्बन करने की व्यवस्था हो सके ।

(5) (1) से (4)) तक के प्रसंगिक मामले ।

4. भारत सरकार को विश्वास है कि राज्य सरकारें तथा संघ प्रशासन, समिति को उसके कार्य में पूरा-पूरा सहयोग देगें ।

5. समिति को अपनी रिपोर्ट 15 अगस्त, 1972 तक प्रस्तुत करनी है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए और उसकी प्रति सभी राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों को भी भेजी जाए ।

दिनांक 7 जुलाई 1972

संकल्प

सं० 39—टी०ए०जी०(3)/72—छटे अनुसूची के साथ पठित मोटर गाड़ी अधिनियम, 1939 की धारा 24(3) के अनुसार, मोटर गाड़ियों के रजिस्ट्रेशन चिन्ह में अधिनियम के अंतर्गत प्रत्येक राज्य को नियतन किये गये अक्षर समूह शामिल होते है और उसके पीछे एक ऐसी संख्या होती है जो कि चार अंकों से अधिक नहीं होती । इस समय कानूनी तौर पर, मोटर गाड़ियों की नम्बर प्लेटों पर लिखे अक्षर अंग्रेजी में होने चाहिएं और संख्या पट्ट, भारतीय संख्यापट्टों के अंतर्राष्ट्रीय रूप में होने चाहिए, भारत के संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार, देवनागरी लिपि में हिन्दी संघ की राजभाषा है । कुछ राज्यो ने हिन्दी को अपनी राजभाषा और संघ तथा अन्य राज्यों के साथ पत्र व्यवहार की भाषा के रूप में अपनाया है । इन राज्यों का विचार है कि मोटर गाड़ियों की नम्बर प्लेटों पर रजिस्ट्रेशन चिन्ह लगाने, किलोमीटर पत्थरों पर और राष्ट्रीय राजमार्गों पर साइन बोर्ड लिखने के लिए देवनागरी लिपि का प्रयाग किया जाए । कुछ अन्य राज्यों ने मोटर गाड़ियों पर रजिस्ट्रेशन चिन्ह लगाने के लिए प्रादेशिक भाषाओं के प्रयोग की मांग की है ।

2. कुछ समय यह मामला विचाराधीन रहा है । संबंधित विषयों पर अगस्त, 1971 में श्रीनगर में हुई परिवहन विकास परिषद् की नवीं बैठक में चर्चा की गई । चूंकि मोटर गाड़ियों की नम्बर प्लेटों, किलोमीटर पत्थरों और राष्ट्रीय राजमार्गों पर प्रयोग की जाने वाली लिपि के बारे में राज्यों में विचारों की एकरूपता नहीं थी, अतः इस बात पर सहमति हुई कि समस्या का अध्ययन करने और इस संबंध में सिफारिश करने के लिए एक कार्य दल बनाया जाये । भारत सरकार ने इस निष्कर्ष को स्वीकार कर लिया है और तदनुसार संबंधित विषयों की जांच पड़ताल के लिए एक कार्य दल गठित करने का निश्चय किया है ।

3. उक्त कार्य दल का गठन निम्न प्रकार से होगा :—

(i) श्री एस० एन० सिन्हा
महानिदेशक (सड़क विकास) तथा
अतिरिक्त सचिव, नौवहन और
परिवहन मंत्रालय — अध्यक्ष

(ii) श्री के० शिवराज,
संयुक्त सचिव,
नौवहन और परिवहन मंत्रालय — सदस्य

(iii) श्री कुलवन्त सिंह,
गृह कार्य आयुक्त तथा
सचिव, पंजाब सरकार, परिवहन विभाग — सदस्य

(iv) श्री जी० पी० पाण्डेय,
सचिव, उत्तर प्रदेश, सरकार,
परिवहन विभाग — सदस्य

(v) श्री पी० सी० सेन,
उप परिवहन आयुक्त
(प्रशासन), मध्य प्रदेश,
ग्वालियर । — सदस्य

(vi) श्री आर० एस० कुम्भट,
उप-सचिव, राजस्थान सरकार,
गृह विभाग — सदस्य

(vii) श्री ए० कितचानन,
संयुक्त सचिव, तमिल नाडु सरकार,
गृह विभाग — सदस्य

(viii) श्री गुरुदास
परिवहन आयुक्त,
आन्ध्र प्रदेश — सदस्य

(ix) श्री एस० एस० तिनईकर,
परिवहन निदेशक,
महाराष्ट्र — सदस्य

(x) श्री बी० बरवा,
परिवहन आयुक्त, असम — सदस्य

(xi) उप-सचिव,
नौवहन और परिवहन मंत्रालय,
(सड़क परिवहन से संबंधित) — सदस्य सचिव

4. कार्य दल के विचारार्थ विषय निम्न प्रकार होंगे :—

(i) मोटर गाड़ी अधिनियम, 1939, भारत के संविधान और राजभाषा अधिनियम के उपबन्धों के अनुसार मोटर गाड़ियों पर रजिस्ट्रेशन चिन्ह, किलोमीटर पत्थर और राष्ट्रीय राजमार्गों पर साइन बोर्ड लिखने के लिए भाषा या भाषाओं सम्बन्धी स्थिति की जांच करना और मोटर गाड़ियों पर रजिस्ट्रेशन चिन्ह, किलोमीटर पत्थरों तथा राष्ट्रीय राजमार्गों पर साइन बोर्ड लिखने के लिए प्रयोग की जाने वाली लिपि या लिपियों के बारे में सिफारिश करना जिसमें वे संशोधन भी शामिल हैं जोकि सिफारिशों को कार्यान्वित करने के लिए मोटर गाड़ी अधिनियम के लिए आवश्यक हो ।

(ii) उपर्युक्त (i) के अन्तर्गत सिफारिशों के आधार पर उन भाषा या उन भाषाओं का सुझाव देना जोकि मोटर गाड़ी अधिनियम और राज्य मोटर गाड़ी नियमों में उल्लिखित फार्मों में इस्तेमाल की जा सकती है/हैं ।

5. भारत सरकार को आशा है कि राज्य सरकार तथा संघ प्रशासन और सभी अन्य संबंधित संस्था और विषय वस्तु में रुचि लेने वाले व्यक्ति, कार्य दल की पूछताछ के संबंध में सभी आवश्यक सहायता प्रदान करेंगे ।

6. दल यथाशीघ्र अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए और सभी संबंधितों को भेज दिया जाए ।

के० शिवराज, संयुक्त सचिव

सिंचाई और विद्युत मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 22 जून 1972

संकल्प

सं० 8 (1)/72-जी० बी०—भारत सरकार तथा बंगला देश सरकार ने उन नदी प्रणालियों का विस्तृत सर्वेक्षण करने जिनमें दोनों देशों का हिस्सा है, बाढ़-नियंत्रण के क्षेत्र में दोनों देशों से सम्बन्धित परियोजनाएं तैयार करने और उन्हें क्रियान्वित करने के लिए एक भारत-बंगला देश संयुक्त नदी आयोग, स्थायी आधार पर स्थापित करने का फैसला किया है । संयुक्त आयोग के भारतीय सदस्य निम्नलिखित हैं:—

1. श्री एन० जी० के० मूर्ति, सह-अध्यक्ष/अध्यक्ष
2. श्री बी० एन० नागराज, सदस्य

अन्य सदस्यों के नाम यथासमय बताए जाएंगे ।

सिंचाई और विद्युत मंत्रालय भारतीय सदस्यों की सहायता के लिए स्टाफ की व्यवस्था करेगा ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति सभी राज्य सरकारों को सूचनार्थ प्रेषित कर दी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र में आम जानकारी के लिए प्रकाशित कर दिया जाए ।

संकल्प

सं० 8 (16)/72-जी० बी०:—भारत सरकार तथा बंगला देश सरकार ने फैसला किया है कि बंगला देश के विद्युत ग्रिडों को भारत के सहवर्ती क्षेत्रों के साथ जोड़ने की संभाव्यता की जांच करने के लिए तथा विद्युत विकास के मामले में दोनों देशों के बीच समन्वय सुनिश्चित करने के लिए एक भारत-बंगला देश संयुक्त विद्युत समन्वय बोर्ड स्थापित किया जाए । यह फैसला किया गया है कि श्री ए० के० घोष, उपाध्यक्ष, केन्द्रीय जल और विद्युत आयोग (विद्युत स्कंध) बोर्ड में भारतीय सदस्य के रूप में होंगे ।

केन्द्रीय जल और विद्युत आयोग (विद्युत स्कंध) भारतीय सदस्य की सहायता के लिए स्टाफ की व्यवस्था करेंगे ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति सभी राज्य सरकारों को उनको सूचनार्थ प्रेषित कर दी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र में आम जानकारी के लिए प्रकाशित कर दिया जाए ।

एस० एन० गुप्त, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 18th July 1972

No. 92-Pres./72.—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Squadron Leader IQBAL SINGH BINDRA (6360)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Iqbal Singh Bindra was commanding a detachment of a Fighter Bomber Squadron at a forward airfield. On the 17th December, 1971, while on a combat Air patrol he spotted one enemy F. 104 approaching the airfield. He engaged it before it could launch an attack on the airfield. Finding tough opposition, the enemy aircraft abandoned the mission and attempted to escape but Squadron Leader Iqbal Singh Bindra pursued the aircraft and shot it down. In addition to carrying out operational duties, he also ensured a high rate of aircraft serviceability.

Throughout, Squadron Leader Iqbal Singh Bindra displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

2. Squadron Leader PREET PAL SINGH GILL (6342)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971 Squadron Leader Preet Pal Singh Gill carried out a number of successful night bombing missions over vital and heavily defended targets situated deep inside enemy territory, and caused severe damage to enemy installations notwithstanding heavy enemy opposition.

Throughout, Squadron Leader Preet Pal Singh Gill displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

3. Squadron Leader DILIP KUMAR DASS (6334)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971 as a pilot in a Fighter Bomber Squadron, Squadron Leader Dilip Kumar Dass flew a number of operational missions. On the 5th December, 1971, he was detailed on a mission to destroy a massive enemy thrust spear-headed by a tank regiment at Longewala. He carried out three strike missions on the 5th December and one on the 6th December, 1971, and destroyed four tanks, a number of vehicles and troops concentrations despite heavy ground fire. His missions had a decisive effect in frustrating the enemy thrust.

In this action, Squadron Leader Dilip Kumar Dass displayed gallantry, determination and professional skill of a high order.

4. Squadron Leader GHANSHYAM SINGH THAPA
(6003)
(Flying (Navigator)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Ghanshyam Singh Thapa served with a Bomber Squadron. He was the lead Navigator of a formation of four Bomber Aircraft that carried out the first bombing attack, on the night of the 3rd/4th December 1971, deep into the enemy territory, over the vitally located and well defended Pakistan Air Force Base of Masroor. He navigated the aircraft to the target despite very heavy ground fire. He dropped all the bombs with pinpoint precision causing heavy damage.

In this action, Squadron Leader Ghanshyam Singh Thapa displayed gallantry, professional skill and leadership of a high order.

5. Squadron Leader SANJAY KUMAR CHOUDHURY
(5863)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Sanjay Kumar Choudhury served in the Eastern Sector. On the night of the 7th/8th December, 1971,

a special heliborne operation was undertaken for landing a battalion at Sylhet which was at that time under enemy occupation. Squadron Leader Choudhury volunteered and landed with the first wave of troops to personally hold up and supervise the lighting of flares. During the process, the helicopter landing area came under heavy enemy gun fire. Regardless of his safety, he with the help of one jawan, made efforts to light up the landing zone. Shortly thereafter, the jawan was killed by enemy fire. Undeterred Squadron Leader Choudhury single-handed lit the flares and kept the lit stay the whole night. This enabled the heliborne operation to continue the whole night and its successful completion.

In this action, Squadron Leader Sanjay Kumar Choudhury displayed gallantry, determination and leadership of high order.

6. Squadron Leader JASBIR SINGH (5783) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Jasbir Singh was a senior pilot of a fighter Bomber Squadron. On the 6th December, 1971 he carried out a tactical reconnaissance mission deep behind the enemy lines in LONGEWALA area and brought back exhaustive information of vital importance which altered the course of battle in the area to advantage. Later, on the same day he destroyed a tank and a large number of support vehicles in the area. Again, on the 9th December, 1971, after carrying out another very useful tactical reconnaissance, he attacked and destroyed four tanks despite heavy ground fire. His mission continued significantly in neutralising the enemy thrust in the area.

Throughout, Squadron Leader Jasbir Singh displayed gallantry, determination and professional skill of a high order.

7. Squadron Leader VISHNU NARAIN JOHRI (5676) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971 Squadron Leader Vishnu Narain Johri was commanding a Fighter Bomber Squadron. He was leading a tactical reconnaissance mission, on the 5th December, 1971, when he spotted a train at Bhawal Nagar, carrying tanks. He immediately went into attack and while attacking the train the port wing of his aircraft was damaged by anti-aircraft fire. Undeterred and unmindful of his safety, he pressed home his attack and destroyed a large number of tanks. After pulling out of the attack, he found the port wing of his aircraft on fire. with great presence of mind and skilful flying, he brought the crippled aircraft back to base safely. He also flew several other missions successfully.

Throughout, Squadron Leader Vishnu Narain Johri displayed gallantry, professional skill and leadership of a high order.

8. Squadron Leader ASHOK PRATAPRAO SHINDE (5671) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Ashok Prataprao Shinde was serving as a Service Pilot in a Fighter Squadron. He led a number of ground attack missions in support of our troops. On two occasions, he was responsible for blunting the advance of enemy armour in Chamb Jaurian Sector. With utter disregard to his personal safety, he led this formation in a determined attack knocking out 7 enemy tanks and 27 vehicles despite heavy anti-aircraft fire. This action had a decisive effect in relieving enemy pressure on our ground forces in this sector.

Throughout, Squadron Leader Ashok Prataprao Shinde displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

9. Squadron Leader CHARANJIT SINGH SANDHU (5591) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Charanjit Singh Sandhu was in command of a helicopter unit. On the night of the 7th/8th December, 1971, he personally led a special heli-borne operation deep behind the enemy positions in the Eastern Sector. During the first mission, his force came under enemy fire, but he successfully carried out the landings of his force. The same night, he flew an additional five similar missions. During the operations, he led a total of 34 such hazarduous missions.

Throughout, Squadron Leader Charanjit Singh Sandhu displayed gallantry, professional skill and leadership of a high order.

10. Squadron Leader KALYAN KUMAR DUTTA (5450), Flying (Navigator)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Kalyan Kumar Dutta, as Navigation Leader of a Bomber Squadron, played a key role in the successful performance of the Squadron. The entire missions and the route missions for the Squadron were meticulously carried out by him. In addition, as Navigator to his Squadron Commander, he undertook the most difficult and dangerous missions himself. On a special mission to an airfield by night, he executed some of the best and most accurate navigation at extremely low altitude of 100 to 200 feet above the hilly terrain resulting in a successful first run attack over the runway.

Throughout, Squadron Leader Kalyan Kumar Dutta displayed gallantry, professional skill and leadership of a high order.

11. Squadron Leader SINDHAGHATTA SUBBARAMU (5371) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Sindhaghatta Subbaramu was attached to a Fighter Squadron. He flew thirty two missions in the form of Combat Air Patrol, escort and interception. He flew these sorties in adverse weather conditions and in pitch dark night in the vicinity of hilly areas. During every escort mission, he ensured that the strike force was never threatened in any way by enemy aircraft and this enabled the strike force to attack the targets. He always brought the strike forces back to base safely.

Throughout, Squadron Leader Sindhaghatta Subbaramu displayed gallantry, professional skill and leadership of a high order.

12. Squadron Leader DINESH CHANDRA BHANDARY (5219) Flying (Navigator)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Dinesh Chandra Bhandary was serving with an operational Bomber Squadron. As a senior Navigator, he was responsible for leading and planning the raids against various difficult targets. He flew nine missions against deep centred enemy targets which were well defended with air-cover and ground ack-ack. Some of the missions were flown in broad day light involving great risk. His determination and cool courage in hitting the enemy targets were an ideal example to junior Navigators. His guidance and advice were mainly responsible for the success of other missions also.

Throughout, Squadron Leader Dinesh Chandra Bhandary displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

13. Squadron Leader KIRPAL SINGH (5115), VM Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Kirpal Singh with utter disregard to his safety, carried out 9 successful operational sorties in the face of stiff enemy air and ground opposition. The information obtained from these sorties probed of great value to our Air Ground forces in taking swift action to deal with enemy concentrations.

Throughout, Squadron Leader Kirpal Singh displayed gallantry, determination and professional skill of a high order.

14. Squadron Leader ANIL KUMAR BHADRA (5114) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Anil Kumar Bhadra as Flight Commander of a Bomber Squadron carried out and led night bombing

missions deep into enemy territory and attack vital and heavily defended military targets. On one occasion, although he was subjected to heavy Ack-Ack fire at a low altitude, he continued with his attack and dropped his bombs on the target causing considerable damage.

Throughout, Squadron Leader Anil Kumar Bhadra displayed gallantry, professional skill and leadership of a high order.

15. Squadron Leader JASJIT SINGH (5100) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Jasjit Singh flew a number of operational missions over heavily defended enemy areas. In spite of heavy ground opposition, he pressed home his attacks and destroyed a number of enemy tanks, gun positions and bunkers. He also supervised the servicing of aircraft and thus ensured maximum availability of aircraft for operations.

Throughout the operations, Squadron Leader Jasjit Singh displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

16. Squadron Leader RAVINDRA NATH BALI (5059) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Ravinder Nath Bali was a senior pilot in a Fighter Bomber Squadron. He was detailed to destroy a massive enemy thrust spearheaded by a tank regiment at Longewala. He led three strike missions on the 5th December, 1971 and one on the 6th December, 1971. During these attacks, he destroyed three tanks and caused extensive damage to a number of other tanks and vehicles despite heavy ground fire and on some occasions intense enemy air opposition. On the 7th December, 1971, he again led a strike mission to the same area and destroyed two tanks. However, during the pull-out after the second attack, his aircraft was hit by ground fire and half of the control surfaces were knocked off. Despite the damage to his aircraft, he skilfully brought it back to base. His missions contributed significantly in neutralising the enemy thrust and in the overall success of the operations.

Throughout, Squadron Leader Ravindra Nath Bali displayed gallantry, professional skill and leadership of a high order.

17. Squadron Leader SURESH DAMODAR KARNIK (5056)

During the operations against Pakistan in December, 1971 Squadron Leader Suresh Damodar Karnik served as Flight Commander of a Bomber Squadron. He flew six very important and difficult missions, by day as well as by night in the Western and the Eastern Sector. These missions involved day and night bombing raids over enemy airfields and interdiction of enemy boats by day. The interdiction missions were flown against a large volume of flak, resulting in damage of his aircraft by enemy fire. Despite this, he pressed home his attacks and destroyed a number of enemy boats. He also carried out a day bombing raid over Chittagong airfield in the face of heavy Ack Ack fire. During this mission, he bombed and destroyed a large P.O.L. dump. In addition to flying his share of missions, he shouldered the burden of supervision of missions and the administration of the flight.

Throughout, Squadron Leader Suresh Damodar Karnik displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

18. Squadron Leader KRISHAN KUMAR BAKSHI (5012) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Krishan Kumar Bakshi was a senior pilot in one of the fighter Bomber Squadrons. On the 6th December, 1971, he was leading a mission over Naya Chor and Dhoran area. While proceeding to the target, his Number two spotted a formation of four enemy Sabre aircraft. Though outnumbered, he turned towards the enemy aircraft and engaged them in aerial battle and in the ensuing dog fight shot down one Sabre. In addition, he also led a number of offensive air strike missions causing extensive destruction to enemy ground defended position, vehicles and troops in the face of heavy ground fire.

Throughout, Squadron Leader Krishan Kumar Bakshi displayed gallantry, professional skill and leadership of a high order.

19. Squadron Leader ALLAN DAVID ALLEY (4975) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, as Flight Commander of a Fighter Bomber Squadron, Squadron Leader Allan David Alley flew 15 operational missions in close support of our ground force, interdiction and offensive strikes. Between 4th December and 6th December, he led strike missions in the Eastern Sector in Saidpur area and destroyed three steamers and four trains. He also extensively damaged three marshalling yards and destroyed four bridges and four enemy bunkers. In the Western Sector, he flew as a Deputy Leader in a strike mission over Sialkot and Wazirabad marshalling yards. In spite of heavy enemy ground fire, he caused serious damage to the marshalling yards.

Throughout, Squadron Leader Allan Daid Alley displayed gallantry, professional skill and leadership of a high order.

20. Squadron Leader GURSARAN SINGH AHLUWALIA (4912) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Gursaran Singh Ahluwalia was the Senior Flight Commander of a Bomber Squadron. He was largely responsible for the planning, tactics, weapon delivery system and overall supervision in the conduct of bomber operations of the unit. His planning and execution, which included his leading seven missions into enemy territory and successfully completing them in spite of his aircraft being damaged on three missions due to heavy flak, acted as a source of inspiration to the air and ground crew.

Throughout, Squadron Leader Gursaran Singh Ahluwalia displayed gallantry, professional skill and leadership of a high order.

21. Squadron Leader CHARANJIT SINGH (4823), Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Squadron Leader Charanjit Singh undertook a large number of missions over enemy territory and brought back very valuable information on enemy targets and dispositions which greatly helped in the planning and execution of operations With full knowledge of the dangers involved, he volunteered and undertook these missions cheerfully. In these missions, he penetrated deep into enemy territory fearlessly during day time.

Throughout, Squadron Leader Charanjit Singh displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

22. Flight Lieutenant SURINDER SINGH MALHOTRA (8449) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Surinder Singh Malhotra was serving with a Fighter Bomber Squadron. On the 12th December, 1971, when he was detailed to carry out a photo reconnaissance mission over Risalwala airfield deep inside enemy territory, he was required to take the photographs from a height of 4 kilometres in order to cover the entire airfield. When he pulled up to the required height, he noticed two enemy Mig 19 aircraft flying over the airfield. One of these aircraft was ahead to his right and turning towards him. He skilfully manoeuvred his aircraft and positioned himself behind the Mig 19. As soon as the enemy aircraft came within firing range, he opened fire and saw enemy aircraft emitting smoke and going down. After this engagement, he brought his aircraft back to base safely. On earlier occasions also, he had photographed the same airfield and had brought back excellent photographs which were of immense value to our operations and planning. In addition, he also carried out a number of close air support and interdiction missions despite heavy ground opposition.

Throughout, Flight Lieutenant Surinder Singh Malhotra displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

23. Flight Lieutenant RAMESH CHANDER GOSAIN (9447)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Ramesh Chander Gosain as a pilot of a Fighter Bomber Squadron, was detailed in attack a massive enemy thrust at Longewala on the 5th and the 6th December, 1971. Despite heavy and concentrated enemy ground fire, he destroyed five enemy tanks as well as several gun positions and vehicles.

In this action, Flight Lieutenant Ramesh Chander Gosain displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

24. Flight Lieutenant IQBAL ALI SYED (8420)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Iqbal Ali Syed was serving in a Fighter Bomber Squadron. He flew a number of operational missions and destroyed nine tanks, eight vehicles, a gun position, a fuel dump, one building, one watch tower and a fuel train. He also attacked concentrations of enemy troops and armour.

Throughout, Flight Lieutenant Iqbal Ali Syed displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

25. Flight Lieutenant MAHABIR PRASAD PREMI (8378)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Mahabir Prasad Premi was commanding a Helicopter detachment in the Rajasthan sector. On the 6th December 1971, while engaged in casualty evacuation he discovered an unexploded bomb lying near his Helicopter. Realising that if the bomb exploded, the Helicopter would be damaged, he decided to take off the Helicopter. After he had started up the Helicopter, an air raid alert was given over the airfield, but inspite of it he took off and landed the Helicopter in a safer area. Immediately after this, the bomb exploded but by his timely action the Helicopter was saved. On the 11th December, 1971, he evacuated two casualties from an area which was under enemy air attack.

In this action, Flight Lieutenant Mahabir Prasad Premi displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

26. Flight Lieutenant GOVIND CHANDRA SINGH RAJWAR (8103), VSM
Flying (Navigator)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lt. Govind Chandra Singh Rajwar undertook a large number of hazarduous missions and completed them successfully. The information obtained on these missions, contributed to a large extent towards our planning and successful execution of operations.

Throughout, Flight Lieutenant Govind Chandra Singh Rajwar displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

27. Flight Lieutenant MOHINDER SINGH SANDHU (8101)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lt. Mohinder Singh Sandhu flew a number of operational reconnaissance missions over enemy territory. On the 4th December, 1971, he was detailed for an air mission over Sargodha at night. He carried out this mission successfully.

Throughout, Flight Lieutenant Mohinder Singh Sandhu displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

28. Flight Lieutenant SHIVINDER SINGH BAINS (7727)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, as a pilot in a Fighter Squadron Flight Lt. Shivinder Singh Bains flew fourteen operational missions in Poonch, Uri and Kargil Sector in close support of our ground forces. He led missions deep into enemy territory in the face of heavy enemy ground opposition. He destroyed two enemy convoys of trucks in the Haji Pir Bulge. In one of these missions in the Poonch Sector, his aircraft was hit by ground fire but he brought the aircraft back to base safely.

Throughout, Flight Lieutenant Shivinder Singh Bains displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

29. Flight Lieutenant HARBANS PERMINDER SINGH (7485)
Flying (Navigator)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Harbans Perminder Singh was serving with a Bomber Squadron. On the 5th December, 1971, he was detailed on a mission to rain an enemy airfield. The route to target involved deep penetration into enemy territory having adequate radar coverage. The target itself was well defended with enemy fighter and ack-ack. He reached the target and bombed it with accuracy. He also successfully completed six other missions allotted to him.

Throughout, Flight Lieutenant Harbans Perminder Singh displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

30. Flight Lieutenant NITIN GAJANAN JUNNARKAR (7477),
Flying (Navigator)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Nitin Gajanan Junnarkar flew a number of hazarduous Photo Reconnaissance missions over enemy territory. He always completed the task assigned to him. The information obtained by him on these missions contributed to a large extent to the successful conduct of the operations.

Throughout, Flight Lieutenant Nitin Gajanan Junnarkar displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

31. Flight Lieutenant SYED SHAHID HUSSAIN NAQVI (7193)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Syed Hussain Naqvi was serving with a Fighter Squadron. He flew nineteen missions deep into enemy territory. On the 9th December, 1971, while on a visual tactical reconnaisance mission in an area in the Western Sector, he flew for nearly twelve minutes over the area despite heavy ground fire and brought back valuable information. He also flew a number of operational missions to three Railway yards. Though these areas were heavily defended, he pressed home his attacks and set ablaze a number of trains carrying fuel and other stores. During these missions, his weapon delivery was accurate and effective and because of his tactics all our aircraft returned safe to base from their missions.

Throughout, Flight Lieutenant Syed Shahid Hussain Naqvi displayed gallantry, professional skil land devotion to duty of a high order.

32. Flight Lieutenant MANJIT SINGH DHILLON (7021), VM
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Manjit Singh Dhillon flew 50 sorties amounting to 27.50 hours in Chhamb, Shakargarh and Poonch sectors. In the Jorian sector, he evacuated a number of casualties on the 6th, 8th, 10th and 11th December, 1971. On the 7th December, 1971, while on a mission to the Chhamb sector, he had to take off from Udhampur airfield when the enemy aircraft were in the vicinity enroute.

he spotted another 9 enemy aircraft and by the time he reached Jorian, enemy's air and artillery shelling was intense. He skillfully manouvered the helicopter at very low height and achieved the mission successfully. On the 10th December, 1971, he undertook sector reconnaissance flight all along the battle field, and completed the task assigned to him despite heavy enemy fire. On the same day, he evacuated 15 casualties. On the 11th December, 1971, he evacuated 8 casualties from an improvised Hali-Pad in the Shakargarh Sector.

Throughout, Flight Lieutenant Manjit Singh Dhillon displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

33. Flight Lieutenant CHANDRA MOHAN SINGLA (6893)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Chandra Mohan Singla served with a heli copter Unit in the Eastern Sector. On the night of the 7th/8th December, he flew an armed helicopter and gave cover to a special Heliborne operation at Sylhet. During this mission, the enemy directed intense ground fire on him and his helicopter was hit at eight places. He kept up these missions and gave air cover for 4½ hours and fired 35 rockets at ground targets with exceptional accuracy. Thereafter, he continued to operate on such hazarduous missions every night from 7th December to 12th December at various places in enemy territory and deep behind the enemy lines.

Throughout, Flight Lt. Chandra Mohan Singla displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

34. Flight Lieutenant PUSHAP KUMAR VAID (6892)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Pushap Kumar Vaid was serving with a helicopter unit deployed in the Eastern Sector. On one occasion it was decided to transport an infantry element to the Sector by air. Flight Lieutenant Pushap Kumar Vaid, knowing fully well that the helicopter landing area would not be adequately lit and that he would come under heavy enemy fire on landing, volunteered to undertake this mission, and successfully completed the task. Subsequently, he flew 34 more hazarduous missions deep behind the enemy lines.

Throughout, Flight Lieutenant Pushap Kumar Vaid displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

35. Flight Lieutenant MANBIR SINGH (6771)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Manbir Singh served with an Operational Squadron in the Eastern Sector. He flew 20 sorties in counter air and offensive support missions over Bangladesh. During an escort mission, he engaged enemy aircraft successfully, forcing them to break off their attacks on the main formation, which was occupied in striking the enemy's airfield. He executed bombing missions against heavily defended airfields by day and night. He also took part in rocket and bomb strikes against variety of targets, like troops, bunkers, gun positions, tanks dumps and Radio transmitters. These targets were protected by guns of varying calibre, and on more than one occasion his aircraft was hit by ground fire.

Throughout, Flight Lieutenant Manbir Singh displayed gallantry, determination and flying skill of a high order.

36. Flight Lieutenant MANJIT SINGH SEKHON (6756), VM
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971 Flight Lieutenant Manjit Singh Sekhon was commanding a detachment of a front line Fighter Squadron. He flew 14 missions at low heights in very difficult terrain of Jammu and Kashmir and caused extensive damage to several enemy bunkers, vehicles, guns, mortar positions, P.O.L. and ammunition dumps. He carried out these missions in the face of heavy ground fire. He substantially contributed to the success of our ground forces in Kargil, Tithwal, Poonch, and Uri Sectors. He also ensured a high rate of serviceability of aircraft.

Throughout, Flight Lieutenant Manjit Singh Sekhon displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

37. Flight Lieutenant KUKKE SREEKANTASASTRY SURESH (6742)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Kukke Sreekantasastry Suresh was on the strength of a Fighter Bomber Squadron. On the 5th December, 1971, he was detailed to destroy a massive enemy thrust spear headed by a tank regiment at Longewala. During this mission, he destroyed two tanks and damaged a number of other tanks despite heavy ground fire. While carrying out the attack, his aircraft was hit and damaged by ground fire, but he skillfully brought the damaged aircraft back to the base safely. On the 13th December, 1971, while on a strike mission, he engaged a sabre aircraft and shot it down.

Throughout, Flight Lieutenant Kukke Sreekantasastry Suresh displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

38. Flight Lieutenant PARMINDER PAUL SINGH KAWATRA (11383) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Parminder Paul Singh Kawatra was attached to a fighter squadron. He flew several missions including three as mission leader in Poonch, Uri, Tithwal and Kargil sectors, and successfully completed all his missions. On the 15th and 16th December, 1971, while engaged in attacks at the enemy posts, his aircraft engines flamed out but he continued the attack after relighting the engines. On the 15th December, 1971, during an enemy air raid on one of our airfields, the camouflage net covering a blast pen caught fire. He rushed to the spot and extinguished the fire despite the fact that enemy aircraft were still overhead.

Throughout, Flight Lieutenant Parminder Paul Singh Kawatra displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

39. Flight Lieutenant WINSTON RABINDER SANJEEVA RAO (10191) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Winston Rabinder Sanjeeva Rao was attached to a Brigade in the Rajasthan area for duties as a Forward Air Controller in the Air Contact Team of the Brigade. The duty of an Air Contact Team requires its members to position themselves at vantage points in the battle zones, from where they can see enemy targets, and guide the pilots of attacking aircraft on to the desired targets by radio. On the 5th December, 1971, a platoon patrol of the Army came under heavy enemy artillery, mortar and machine gun fire. A company of troops was rushed to help the patrol, and Flight Lieutenant Winston Rabinder Sanjeeva Rao was detailed to acompany them. He rushed to the area on a camel and took up a position on a dominating sand dune, exposed to enemy fire, from where he could direct our aircraft on the enemy positions. Again, on the 7th December, 1971, a Company of the Army which was under heavy enemy fire at Saidan asked for an air strike to take place at 1715 hours. Flight Lieutenant Rao volunteered to proceed to the spot to carry out FAC duties, although he knew that Saidan was 52 kilometers away across the desert, including 12 kilometers through enemy territory, and that it was already 1200 hours. He reached the roadhead at 1400 hours and then having organised a patrol led it himself, carrying his radio set along with him on a camel. He succeded in reaching Saidan well in time to direct the air strike very successfully and returned to the Battalion Headquarters on the 11th December, 1971. On the 14th December, 1971, at about 1000 hours, the Saidan defended position was surrounded by an enemy battalion, and by 1400 hours it came under heavy enemy pressure. Once more, Flight Lieutenant Rao volunteered to go to the area to direct strike aircraft against the besieging enemy troops. He left the Battalion Headquarters in a jeep with his radio set and after linking with a patrol from one of the companies, managed to go through to the surrounded Saidan position. The enemy attack was repulsed but during the night, they built up again for another attack. An air strike was called for at 0830 hours on the 15th December, 1971, and this was

excellently directed by Flight Lieutenant Rao as a result of which the enemy was forced to withdraw having suffered heavy casualties in men and equipment.

Throughout, Flight Lieutenant Winston Rabinder Sanjeeva Rao displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

40. Flight Lieutenant YOGENDRA PRASAD SINGH (9867) Flying (Navigator)

During the operations against Pakistan in December, 1971, on a number of night bombing attacks on vital targets deep inside enemy territory. Flight Lieutenant Yogendra Prasad Singh displayed navigational skill of a very high order in accurately navigating over difficult and unfamiliar terrain in the face of heavy enemy opposition. He was a source of inspiration to other aircrews.

Throughout, Flight Lieutenant Yogendra Prasad Singh displayed gallantry, leadership, professional skill and devotion to duty of a high order.

41. Flight Lieutenant KULDEEP SINGH SAHOTA (9848) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, as a pilot of a Fighter Bomber Squadron, Flight Lieutenant Kuldeep Singh Sahota Few thirteen missions in support of our ground forces. He destroyed four enemy tanks and a few heavy guns. On two occasions, information brought by him about enemy tank concentrations in Chhamb-Jourian Sector resulted in planning of subsequent missions which destroyed these enemy tanks.

Throughout, Flight Lieutenant Kuldeep Singh Sahota displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

42. Flight Lieutenant SUKRUTARAJ JAYANDRA (8423) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Sukrutaraj Jayandra was serving with a Fighter Bomber Squadron in the Eastern Sector. While escorting a formation of four aircraft proceeding to Tezgaon airfield, Flight Lieutenant Sukrutaraj Jayandra was number two in a formation of two aircraft. When the formation was attacked by F-86 Sabre aircraft, he engaged one of the enemy aircraft and shot it down.

In this action, Flight Lieutenant Sukrutaraj Jayandra displayed gallantry, determination and professional skill of a high order.

43. Flight Lieutenant ROY ANDREW MASSEY (8428) Flying (Pilot)

On the 22nd November, 1971 at 1450 hours an order was given to intercept four Pakistani aircraft which had intruded into our territory near Boyra in West Bengal. Flight Lieutenant Roy Andrew Massey who was leading a formation of four Gnat aircraft, proceeded to intercept the enemy. He skillfully positioned his section, got behind one of the sabre jets and shot it down. His accurate judgement and skillful manoeuvring of the formation resulted in the shooting down of two more Sabre jets. After ensuring that no other intruder was in our territory, he brought his formation back safely.

In this action, Flight Lieutenant Roy Andrew Massesy displayed gallantry, professional skill and leadership of a high order.

44. Flight Lieutenant PREM BHUSHAN KALRA (8466) Flying (Navigator)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Prem Bhushan Kalra took part in six bombing missions. On every mission, he was instrumental in spotting the source of ground fire and in taking effective counter measures. Though his aircraft was hit on three occasions, he continued with the missions. On the 15th December, 1971, he undertook a mission deep inside enemy territory. The fading light and poor visibility made navigation extremely difficult. He however reached the target and bombed it.

Throughout, Flight Lieutenant Prem Bhushan Kalra displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

45. Flight Lieutenant NIRAJ KUKREJA (8733) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Niraj Kukreja was serving with a Fighter Squadron. On the 17th December, 1971, while he was leading an escort formation for one of our strike missions, he spotted two enemy F-104 aircraft constituting direct threat to the strike mission. He alerted his number two and also informed the leader of the strike mission that he was engaging the enemy aircraft. He skillfully manoeuvred his aircraft and got behind one of the enemy aircraft. After a short air combat, he fired both his missiles as a result of which the enemy aircraft exploded and crashed.

In this action, Flight Lieutenant Niraj Kukreja displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

46. Flight Lieutenant CHIDAMBARAM SARANGAPANI CHANDRASEKARAN (8768) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Chidambaran Sarangapani Chandrasekaran was a pilot in a Fighter Bomber Squadron. He flew 13 operational missions against the enemy ground forces and destroyed 8 tanks, 2 guns positions and one bunker in the face of heavy ground fire.

Throughout, Flight Lieutenant Chidambaran Sarangapani Chandrasekaran displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

47. Flight Lieutenant CHERRY HASSANAND RANEY (8782) Flying (Pilot)

On the 4th December, 1971, Flight Lieutenant Cherry Hassanand Raney led a strike mission over Hussainwala and destroyed an enemy tank. He led a number of other missions over enemy territory in the face of enemy air and ground opposition. His missions had decisive effects on enemy ground forces in Chhamb-Jaurian Sector. He destroyed four tanks and four vehicles in addition to deadly strike over enemy concentration of troops and armour. On the 17th December, he carried out an attack on Lahore Railway Junction causing extensive damage.

Throughout, Flight Lieutenant Cherry Hassanand Raney displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

48. Flight Lieutenant DINESH CHANDER NAYYAR (8995) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Dinesh Chander Nayyar was serving with a Fighter Bomber Squadron in the Eastern Sector. He flew 11 missions during the conflict. On his first counter air mission over Dacca Air Field, he was shot at by enemy Ack-Ack. Regardless of personal safety and in the face of heavy ground fire, he continued with his attacks, which resulted in the silencing of the guns of the airfield as also the loss of a Sabre aircraft on the ground. In one of his subsequent missions, he located a camoflaged P.O.L. dump and destroyed it.

Throughout, Flight Lieutenant Dinesh Chander Nayyar displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

49. Flight Lieutenant ROBINDRA KUMAR SINHA (9032) Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, as a pilot in a Fighter Bomber Squadron, Flight Lieutenant Robindra Kumar Sinha flew a number of operational missions. Some of these missions were for photo/visual reconnaissance deep inside the enemy territory, and the information brought by him helped to plan subsequent strike missions which successfully destroyed enemy targets. He also flew many operational missions in support of our ground forces in Chhamb-Jaurian sector and destroyed four enemy tanks and several vehicles despite heavy ground fire and air opposition.

Throughout, Flight Lieutenint Robindra Kumar Sinha displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

50. Flight Lieutenant ARUN VASANT SATHAYE (9039) Flying (Pilot)

On the 4th December, 1971, Flight Lieutenant Arun Vasant Sathaye as a senior Pilot of a Fighter Bomber Squadron, was detailed as a member of a four air-craft strike missions over

an airfield. He carried out two successful attacks despite heavy ground fire. During his first attack, he destroyed a building and while pulling out noticed an aircraft parked in the adjoining area. He went in for the second attack on the enemy bomber aircraft which was being refuelled. After attacking the aircraft, he saw huge flames near the aircraft and also a column of smoke going up.

In this action, Flight Lieutenant Arun Vasant Sathaye displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

51. Flight Lieutenant ARUN LAXMAN DEOSKAR (9058)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Arun Laxman Deoskar was a pilot in a Fighter Bomber Squadron. He carried out a day counter air mission on an enemy airfield deep inside enemy territory and destroyed two aircraft on ground despite heavy enemy ground fire. On an earlier occasion, he attacked an enemy airfield and damaged its installations. On his way back from this mission, he was engaged by a high performance enemy aircraft. Though his aircraft was damaged, he brought it back safely to base.

Throughout the operations, Flight Lieutenant Arun Laxman Deoskar displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

52. Flight Lieutenant ASPARI RAGHUNATH (9122)
Flying (Navigator)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Aspari Raghunath was serving with a bomber squadron. He volunteered for every sortie and mission. Because of his keenness and ability, he was assigned a special task, which was completed successfully despite enemy Ack Ack and air defence.

Throughout, Flight Lieutenant Aspari Raghunath displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

53. Flight Lieutenant BHARAT BHUSHAN SONI (9392)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Bharat Bhushan Soni was serving with a Fighter Squadron. During an enemy air raid on an airfield, he took off and engaged one F-104 aircraft. He flew his aircraft at almost supersonic speed at low level and shot down the enemy aircraft.

In this action, Flight Lieutenant Bharat Bhushan Soni displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

54. Flight Lieutenant SOMAR SHAH (9413)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Somar Bikram Shah was serving with the detachment of a fighter bomber squadron. On the 16th December, 1971, he was detailed to escort an offensive sweep mission. As the leader of the escort, he substantially helped the offensive sweep mission in accomplishing the task. While returning to base, he spotted a section of the enemy aircraft approaching our aircraft. Flight Lieutenant Somar Bikram Shah immediately engaged the enemy aircraft and in the ensuring air battle shot down the leader of the enemy formation. Due to shortage of fuel, he was prevented from going after the other enemy aircraft. Despite this handicap, he frustrated the efforts of the second enemy aircraft and landed safely without any damage to his own aircraft.

In this action, Flight Lieutenant Somar Bikram Shah displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

55. Flight Lieutenant HEMANT SHARAT KUMAR SARDESAI (9463)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Hemant Sharat Kumar Sardesai was serving with a Fighter Squadron in the Eastern Sector. From the 3rd December to the 16th December, 1971, he flew 11 sorties of counter air missions, 8 sorties of offensive air support missions and 3 sorties of air defensive missions. In one of the offensive support missions, he was responsible for locating and later directing an attack on camouflaged enemy Headquarters bunkers between Rajinderganj and Mahenderganj which resulted in the capture of the enemy Headquarters and about 160 enemy personnel. On the 6th December, 1971, he was in the first bomb strike mission of the Squadron over Tezgaon Airfield, rendering it inoperative. On the night of the 12th December, 1971, he attacked a ghost Airfield at Narsingdi and followed the attack by day Bombing and rendered the airfield unusable. He was in the formation that struck a vital military target in Dacca on the 14th December, 1971. He was also in the first formation that strike enemy troop concentrations in Dacca which accelerated the surrender of the Pakistani forces in Bangladesh.

Throughout the operations, Flight Lieutenant Hemant Sharat Kumar Sardesai displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

56. Flight Lieutenant MANDEPANDA APPACHU GANAPATHY (9464)
Flying (Pilot)

On the 22nd November, 1971, at 1450 hours order was given to intercept four Pakistani aircraft which had intruded in our territory. Flight Lieutenant Mandepanda Appachu Ganapathy who was No. 3 in a formation of four Gnat aircraft proceeded to intercept the enemy. On sighting the enemy aircraft, he skillfully manoeuvred his section and got behind one Sabre jet and shot it down.

In this action, Flight Lieutenant Mandepanda Appachu Ganapathy displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

57. Flight Lieutenant ASHOK KUMAR SINGH (9481)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, as a pilot in a Fighter Bomber Squadron, Flight Lieutenant Ashok Kumar Singh flew 15 missions deep inside enemy territory in the face of heavy ground and air opposition. On the 17th December, 1971, he was ordered to undertake a photo reconnaissance mission which involved flying the aircraft at extreme range and over a target which was heavily defended. While he was over the target, his aircraft was hit by enemy ground fire resulting in leakage of fuel. Undeterred and in complete disregard to his personal safety, he completed the mission and landed safely with critical fuel state, and brought back vital information.

In this action, Flight Lieutenant Ashok Kumar Singh displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

58. Flight Lieutenant JAGDAMBA PRASAD SAKLANI (9554)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Jagdamba Prasad Saklani, as pilot of a Fighter Bomber Squadron, flew thirteen operational missions in support of our ground forces. In addition to the destruction of four tanks and one jeep, he attacked an airfield, bombed enemy concentration of troops and tanks and also bombed another area inflicting heavy damage on the enemy.

Throughout, Flight Lieutenant Jagdamba Prasad Saklani displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

59. Flight Lieutenant ARUNA KUMAR DATTA (9738)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Aruna Kumar Datta flew several operational missions while serving with a detachment of a Fighter Squadron. On the 12th December, 1971, while he was escorting a strike mission, the leader of the escort mission spotted two enemy F-104 aircraft constituting direct threat to our strike force. Both the enemy aircraft were immediately engaged by Flight Lieutenant Datta and his leader. Flight Lieutenant Datta got behind one of the enemy aircraft but it rolled out and attempted to escape. With great skill, he manoeuvred his aircraft behind the enemy and fired both his missiles at an interval of 3-4 seconds and destroyed the enemy aircraft.

In this action, Flight Lieutenant Aruna Kumar Datta displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

60. Flight Lieutenant DILIP KAMALAKAR DIGHE (9745)
Flying (Pilot).

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Dilip Kamalakar Dighe as a pilot of a Fighter Bomber Squadron, flew fourteen sorties in support of our ground forces. On two of these missions, he spotted enemy tank concertrations. He immediately directed the formation on to the target and his own accurate shooting resulted in the destruction of four tanks, numerous enemy vehicles and two gun positions in Chhamb-Jaurian Sector.

Throughout, Flight Lieutenant Dilip Kamalakar Dighe displayed gallantry, professional skill and devotoin to duty of a high order.

61. Flight Lieutenant PARTHA DAS GUPTA (9770)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Partha Das Gupta, was serving with a Fighter Bomber Squadron. He flew 19 operational missions out of which twelve were flown deep into enemy territory. On the 5th December, 1971, while flying as Number Two on a tactical reconnaissance and strike mission in Chistian Mandi-Bahawal Nagar area, he spotted a train carrying tanks near Chistian Mandi. Despite heavy anti aircraft fire he attacked the train twice and destroyed three tanks. Again, while flying as Number Two in a strike mission to Multan, he destroyed a huge oil dump at Multan and returned to base with a marginal endurance of three minutes. He carried out all his missions to the ultimate limits of endurance.

Throughout, Flight Lieutenant Partha Das Gupta, displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

62. Flight Lieutenant RAJENDRA SINGH WAHI (9830)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Rajendra Singh Wahi as a pilot of a Fighter Bomber Squadron, flew thirteen operational missions in support of our ground forces and destroyed three tanks, four vehicles, one fuel dump and one gun position. In addition, he successfully bombed Chander airfield, Zafarwal, a bridge over Dera Baba Nanak as well as enemy concentration of troops in village Dharman. He carried out these missions despite heavy ground fire and air opposition.

Throughout, Flight Lieutenant Rajendra Singh Wahi displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

63. Flight Lieutenant PARVEZ RUSTOM JAMASJI (9834)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Parvez Rustom Jamasji was serving with a Helicopter Squadron. His Helicopter flown by him was attacked twice by machine gun and twice by mortars, but he fulfilled the mission assigned to him and brought back his aircraft to the base. On one occasion, his helicopter had engine failure over enemy position, but he brought it safely to a post within our territory.

Throughout, Flight Lieutenant Parvez Rustom Jamasji displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

64. Flying Officer DONALD LAZARUS (10516)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flying Officer Donald Lazarus was serving with a Fighter Squadron. On the 22nd November, 1971, Flying Officer Lazarus was detailed to fly as No. 4 in a formation of four Gnat aircraft. The formation was ordered to intercept four hostile aircraft which had intruded into our territory. The formation leader manouvred the formation to an advantageous position and engaged the intruding Sabre Jets. In the ensuing air Battle, Flying Officer Lazarus maintained his stations as number four ensuring the safety of his element leader. At one stage, when Flying Officer Lazarus noticed that one of the Sabre Jets was becoming a threat to his element leader, he manouvred his aircraft with great skill and got behind the Sabre Jet and pressed home his attack till the Sabre Jet disintegrated in the mid air.

In this action, Flying Officer Donald Lazarus displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

65. Flying Officer KISHAN LAKHIMAL MALKANI (10576)
Flying (Pilot) (*Posthumous*)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flying Officer Kishan Lakhimal Malkani was serving with a Fighter Bomber Squadron. On the 4th December, 1971, he was detailed to carry out a dusk strike mission over an enemy airfield. In spite of poor visibility over the target, he successfully carried out the attack and destroyed one blast pen. On the 5th December, 1971, he was detailed as Number Two in a strike mission over an enemy Signals Unit. He attacked the Radar Unit and caused such extensive damage that the Radar Station never came on the air throughout the operations. In this operation, he made the supreme sacrifice.

In this action, Flying Officer Kishan Lakhimal Malkani displayed gallantry, determination, professional skill and devotion to duty of a high order.

66. Flying Officer BALCHANDRA CHENGAPA KARUMBAYA (10604)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flying Officer Balchandra Chengapa Karumbaya was serving with a Fighter Bomber Squadron. He carried out two counter air day operation missions to enemy airfields and destroyed a heavy transpost aircraft on the ground and also caused extensive damage to permanent airfield installations in the face of heavy ground fire.

In this action, Flying Officer Ballachandra Chengapa Karumbaya displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

67. Flying Officer SANKARANARAYANAN BALASUBRAMANIAN (10864)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flying Officer Sankaranarayanan Balasubramanian was serving as a pilot with a Fighter Bomber Squadron. On the 4th and the 5th December, 1971, he flew deep day penetration operational missions to an enemy airfield and caused extensive damage to the airfield and its installations despite heavy ground fire.

In this action, Flying Officer Sankaranarayanan Balasubramanian displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

68. Flying Officer BARTAN RAMESH (10948)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flying Officer Bartan Ramesh was serving with a Helicopter Unit. He carried out forty-five successful operational missions, some of which were in the heart of the battle area. During two of these missions he, with complete disregard to his personal safety, evacuated Army Battle casualties from forward Helipads in the Uri Sector in the face of constant shelling by the enemy.

Throughout, Flying Officer Bartan Ramesh displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

69. Flying Officer HARISH MASAND (11272)
Flying (Pilot)

On the 4th December, 1971 Flying Officer Harish Masand was No. 3 in a 3 aircraft strike mission for attacking an enemy airfield. Just short of the target, the formation was intercepted by two Pakistan Air Force Sabre aircraft. In the ensuing dogfight, he shot down one Sabre aircraft. He also undertook a number of Fighter Reconnaissance missions in the enemy territory and completed the task assigned to him.

Throughout, Flying Officer Harish Masand displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

70. Flying Officer JAI SINGH GAHALAWAT (11280)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flying Officer Jai Singh Gahalawat as a pilot in a Fighter Bomber Squadron, flew several operational missions against the enemy. On the 5th December, 1971, he carried out a strike in the Kathua Sector and destroyed a bridge. On the 7th December, while on a close support mission, he destroyed a number of enemy tanks. During one of his missions, his aircraft was hit by enemy ground fire but he brought the aircraft back safely. On the 9th December, 1971, he was number two in a two aircraft formation, when the formation was attacked by six enemy Mirages. He kept a good look around and gave full cover to and support to his leader. Even though 12 Air to Air missiles were fired at them by the enemy aircraft, the formation safely returned to base. On the 10th December, while on a close air support mission in the Chhamb Sector, he attacked enemy positions and caused heavy damage.

Throughout, Flying Officer Jai Singh Gahalawat displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

71. Flying Officer MOHAN DIKSHIT (11309)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, as a pilot in a fighter Bomber Squadron, Flying Officer Mohan Dikshit flew several sorties. He flew as a wingman on a strike mission and damaged a bridge in spite of heavy enemy defences. In the Pathankot sector, he damaged four marshalling yards and the canal headworks. While on a close air support mission, he destroyed some gun positions in the Chhamb area.

Throughout, Flying Officer Mohan Dikshit displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

72. Flying Officer SUKHDEV SINGH DHILLON (11378)
Flying (Pilot)

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flying Officer Sukhdev Singh Dhillon flew as a pilot in a Helicopter unit and single-handed by evacuated 87 battle casualties from the most difficult and hazarduous terrain of the Kargil sector in complete disregard to his personal safety. He carried out these evacuation missions in the face of heavy ground and air opposition.

Throughout, Flying Officer Sukhdev Singh Dhillon displayed gallantry, professional skill and devotion to duty of a high order.

P. N. KRISHNA MANI, Jt. Secy. to the President

MINISTRY OF LAW AND JUSTICE

(Legislative Department)

New Delhi, the 5th June 1972

RESOLUTION

No. F. 10(4)/69-*Wakf.*—The term of the Wakf Inquiry Committee set-up by the Government of India, Ministry of Law and Justice, Legislative Department, Resolution No. F.10(4)/69-Wakf, dated the 9th December, 1970, published in the Gazette of India, Part I, Section 1, dated the 23rd January, 1971, is hereby extended upto the 31st October, 1972.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to all the Ministries/Departments of the Government of India, State Governments, Administrators of Union Territories, etc.

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

N. SRINIVASAN, Dy. Secy.

MINISTRY OF AGRICULTURE

(Department of Agriculture)

New Delhi, the 7th July 1972

RESOLUTION

No. 25-8/68-*LDI.*—In partial modification of this Ministry's Resolution No. 25-8/68-LDI, dated 7th of April, 1972, the Central Government have decided that for the entry against item No. (6) of para 1 of the Resolution, in lieu of Swami Anandji Maharaj, Mantri Bharat Sadhu Samaj, the following shall be *substituted* :—

"(6) Shri Goswami Girdhari Lal, Pradhan Mantri, Sanatan Dharam Pratinidhi Sabha, Punjab Bhupendra Bhavan, Pahar Ganj, New Delhi-55."

T. P. SINGH, Secy.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution may be communicated to :—

(1) All State Governments/Union Territories.

(2) Lok Sabha Secretariat.

(3) Rajya Sabha Secretariat.

(4) Prime Minister's Secretariat.

(5) Cabinet Secretariat.

(6) Shri A. K. Sarkar, Retired Chief Justice of India, 67 Lodhi Estate, New Delhi-3.

(7) Shri Prakash Chander Sethi, Chief Minister, Madhya Pradesh, Bhopal.

(8) Shri M. Karunanidhi, Chief Minister, Tamil Nadu, Madras.

(9) Shri Kamalapati Tripathi, Chief Minister, U.P. Lucknow.

(10) Shri Siddhartha Shankar Ray, Chief Minister, West Bengal, Calcutta.

(11) Swami Anandji Maharaj, Mantri Bharat Sadhu Samaj, Kendriya Ashram, 22, Sardar Patel Marg, New Delhi.

(12) Shri Goswami Girdhari Lalji, Pradhan Mantri, Sanatan Dharam Pratinidhi Sabha Punjab Bhupendra Bhawan, Pahar Ganj, New Delhi-55.

(13) Swami Yogeshwar Videhi Hariji Maharaj, Dwara Bharat Gosevak Samaj, 3, Sadar Thana Road, Delhi-6.

(14) Shri Akshay Kumar Jain, Editor, Nav Bharat Times, Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi.

(15) Dr. Dharam Narain, Chairman, Agricultural Prices Commission, Krishi Bhavan, New Delhi.

(16) Dr. C. Krishna Rao, Animal Husbandry Commissioner, Department of Agriculture, Krishi Bhavan, New Delhi.

(17) Shri H. A. B. Parpia, Director, Central Food Technological Research Institute, Mysore.

(18) Dr. V. Kurien, Chairman, National Dairy Development Board, Anand (Gujarat).

(19) I.C.A.R. Krishi Bhavan, New Delhi.

(20) E.I.E.II, E.III, E.IV, E.V, Accounts I and II and Budget Section.

(21) Information Officer, Department of Agriculture, New Delhi.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

V. P. GULATI, Dy. Secy.

New Delhi, the 7th July 1972

No. 10-1/72-*FAIT.*—Shri K. A. Krishnaswamy, Member of the Rajya Sabha has been elected to serve a member of National Food and Agriculture Organisation Liaison Committee in accordance with the Ministry of Agriculture, (Department of Agriculture) Resolution No. F.10-1/65-FAII, dated the 9th September, 1966, as amended to date, for a period of three years from the 26th May, 1972.

ABU HAKIM, Director (Foreign Aid)

RESOLUTION

New Delhi, the 10th July 1972

No. 24-1/72-*Genl. Coord.*—In pursuance of Government of India, Ministry of Agriculture Department of Agriculture Resolution No. 24-1/72-Genl. Coord., dated the 27th June, 1972 setting up the High Level Committee, the Government of India is pleased to announce the composition of the Committee as hereunder :—

Chairman

(1) Shri P. B. Gajendragadkar, retired Chief Justice of India and Vice-Chancellor, University of Bombay.

Members

(2) Prof. D. S. Kothari, Chairman, University Grants Commission.

(3) Dr. B. D. Nag Choudhuri, Scientific Adviser to the Ministry of Defence.

(4) Shri H. N. Sethna, Secretary, Atomic Energy Commission.

(5) Shri B. Venkatappiah, Chairman, Rural Electrification Corporation, New Delhi.

The Committee will devise its own procedure, call for statements, record evidence, and will take such other action, and adopt such other measures as, in its opinion, may help it to make a proper study of the questions referred to it. The Committee may appoint, on suitable terms, study team(s) or panel of advisers if it thinks necessary to do so. It may also visit the Indian Agricultural Research Institute and such other Institutes as it may deem desirable.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to the Chairman and other members of the High Level Committee, all Ministries/Departments of the Government of India, the Prime Minister's Secretariat, the President's Secretariat, Planning Commission, Cabinet Secretariat, Comptroller and Auditor General of India, Secretaries to the Government of all States and Union Territories, Agriculture Departments, all Attached and Subordinate Offices of the Ministry of Agriculture (Department of Agriculture), the Lok Sabha Secretariat, the Rajya Sabha Secretariat, Parliament Library (5 copies).

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

The 11th July 1972

No. F. 21-14/72-*Genl.Coord.*—Capt. Rattan Singh who was appointed as Part-time Member of the National Commission on Agriculture *vide* this Ministry's Notification No. 6-30/70-GC, dated the 7th November, 1970, has tendered resignation from the Membership of the Commission. Consequent upon the acceptance of his resignation with effect from the 29th May, 1972, he ceases to function as part-time Member of the National Commission on Agriculture.

Q. M. AHMED, Jt. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION & SOCIAL WELFARE

New Delhi, the 22nd June 1972

AMENDMENT TO RESOLUTION

SUBJECT :—*Re-constitution of the All India Council of Sports.*

No. F.1-2/72-*YS.*1(2).—The following amendments are hereby made to the Resolution No. F.1-2/72YS.1(2), dated the 13th April, 1972 reconstituting the All India Council of Sports :—

(1) For Para 4(v) and (vi), the following shall be *substituted* :

"(v) Four Members of Lok Sabha to be nominated by the Speaker of Lok Sabha. 4

"(vi) Two Members of Rajya Sabha to be nominated by the Chairman, Rajya Sabha. 2

(2) The figure "33" at the end of Para 4 will read as "36".

ORDER

2. ORDERED also that a copy of this amendment to Resolution be published in the Gazette of India for general information and communicated to all concerned.

KANTI CHAUDHURI, Jt. Secy.

(Department of Social Welfare)

RESOLUTION

New Delhi-1, the 13th July 1972

No. 27/2/70-*NS.*—In partial modification of this Department's Resolution No. 27/2/70-NS, dated the 22nd January, 1972 the Government of India nominate Shri D. K. Oza, Secretary, Social Welfare Department, Government of Tamil Nadu, Madras to be a member of the Advisory Committee for 'Special Nutrition Programme' for a period of one year from the date of this Resolution in place of Shri M. M. Rajendran, who has been appointed as Secretary, Labour Department.

ORDER

ORDERED that the above resolution be published in the Gazette of India.

P. P. I. VAIDYANATHAN, Addl. Secy.

POSTS AND TELEGRAPHS BOARD

RESOLUTIONS

New Delhi, the 3rd July 1972

No. 11/2/71-*GA.*—With a view to establish closer relations between the Posts and Telegraphs Department and users of P&T services on matters of all India character relating to services provided by the Department, and improving the efficiency of such services, the President has been pleased to direct that a Central Posts and Telegraphs Advisory Council be constituted as under :—

Composition

A. *Chairman*

Minister for Communications.

B. *Official Members*

Chairman, P&T Board—*Vice Chairman.*

Senior Member (Telecom. Operations), P&T Board

Senior Member (Finance), P&T Board.

Senior Member (Posts), P&T Board.

Six representatives of State Governments by rotation.

Five Principal Government users of P&T services, *viz.*, one representative each from :—

(i) Railway Board.

(ii) Ministry of Defence.

(iii) All India Radio.

(iv) Press Information Bureau.

(v) Overseas Communications Service.

Three representatives of Ministries of the Government of India closely connected with the working of the P&T, *viz.*, one representative each from :—

(i) Ministry of Shipping and Transport,
(ii) Ministry of Industrial Development & Internal Trade,
(iii) Ministry of External Affairs.

One representative of Planning Commission.

Member (Administration), P&T Board—*Member Secretary.*

C. Non-Official Members

Ten Members of Parliament : (6 from Lok Sabha and 4 from Rajya Sabha).

Two representatives of Airlines *viz.*, one representative each from :—

(i) Indian Airlines.
(ii) Air India.

Four representatives of Chambers of Commerce and Industry *viz.*, Presidents or their nominees of the following organisations :—

(i) Federation of Indian Chambers of Commerce & Industry.
(ii) Associated Chambers of Commerce and Industry of India.
(iii) All India Manufacturers' Organisation.
(iv) National Alliance of Young Entrepreneurs.

Five representatives of the Press and Indian News Agencies *viz.*, one representative each from :—

(i) Press Trust of India.
(ii) All India Newspapers Editors' Conference.
(iii) Indian Federation of Working Journalists.
(iv) United News of India.
(v) Hindustan Samachar.

One representative of Philatelic Interests.

Two representatives of P&T Employees Federations, *viz.*, one representative each of the National Federation of P&T Employees and the Federation of National P&T Organisation :

Three representatives nominated at the discretion of the chairman :

Tenure

2. The non-official Members will hold office for two years commencing from the 1st January of the first year of tenure.

Termination of Membership

3. Membership of a non-official member may be terminated (i) if he ceases to represent the interests against which he had been nominated or (ii) for any other reason, by the Chairman.

Functions

4. (a) The Council will consider, and make recommendations on, subjects relating to :

(i) Such services and facilities provided by the P&T Department as may be referred to it for consideration by the Chairman;

(ii) Services and facilities provided by the P&T Department which individual members of the Council, may, with the approval of the Chairman, desire to be included in the agenda;

(iii) Extensions and improvements of existing projects;

(iv) any other matter of general public interest or public convenience relating to the Posts and Telegraphs department.

(b) The council established under this Resolution will be purely consultative in character.

(c) Questions relating to staff, discipline and appointments shall not be brought before the Council.

Rules of business

5. (a) The Council will meet at least once a year.

(b) The Chairman may constitute Committees or Sub-Committees of the Council to advise the Government on specific problems relating to the services and facilities provided by the P&T Department.

(c) Any member wanting to bring up a subject for discussion should give a clear notice of one month to the Secretary and state briefly the subject to be discussed. The Secretary will circulate the agenda giving the members atleast 10 days' notice, together as far as possible with a memo on each item. Urgent business may, however, be brought forward for consideration without notice but with the approval of the Chairman. The Chairman may rule out a subject at his discretion.

(d) A copy of the minutes of the meeting of the Council will be furnished to each member of the Council and two copies placed in the Library of the Parliament. Heads of Circles will also be supplied with copies.

(e) The proceedings of the meetings will be confidential but a short summary of the proceedings will be ordinarily prepared and given to the Press.

Travelling Allowance

6. The non-official members will be paid travelling and daily allowance for attending the meetings of the Council at the rates fixed by Government from time to time.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India for general information

ORDERED also that a copy of the Resolution be communicated to :

1. The Chairman, other Members and Member Organisations of the Council.
2. All Heads of Circles and Administrative Offices.
3. A.G., P&T Delhi and all Directors/Dy. Directors, Audit and Accounts, P&T.
4. All Officers/Sections of the P&T Directorate.

Sd/-(Illegible), Member (Admn.) & *Ex-officio* Jt. Secy.

MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT

(Transport Wing)

RESOLUTIONS

New Delhi, the 23rd June 1972

No. 24-7(39)/72.—The Governments of Bihar and Rajasthan had suggested some amendments to the Motor Vehicles Act, 1939 to provide for grant of temporary permits to private operators, pending introduction of State Transport Services on nationalised routes and simplification of the procedure for nationalisation of road transport. These suggestions were considered by the Standing Committee of the Transport Development Council on Road Transport when it was decided that a Committee of Officers from a few States and the Union Ministries of Law and Justice and Shipping and Transport should be set up to examine the proposals in details. The Government of India have accepted this recommendation and are to pleased to set up a Committee as follow :—

2. The composition of the Committee shall be :—

Chairman

(1) Shri K. Sivaraj, Joint Secretary, Ministry of Shipping and Transport.

Members

(2) A representative of the Union Ministry of Law and Justice.
(3) A representative of the Government of Assam.
(4) A representative of the Government of Madhya Pradesh.
(5) A representative of the Government of Bihar.
(6) A representative of the Government of Mysore.
(7) A representative of the Government of Rajasthan.
(8) A representative of the Government of West Bengal.
(9) A representative of the Delhi Administration.

3. The terms of reference of the Committee will be as follows : —

(1) To study the existing procedures connected with nationalisation of road transport under the Motor Vehicles Act, 1939 and recommend changes therein with a view to expedite such nationalisation.

(2) To suggest the time limit that may be laid down for implementing a scheme for nationalisation of road transport after it is finally published and the consequences which would follow in cases where the scheme is not implemented within the prescribed time.

(3) To indicate the maximum period for which temporary permits may be granted to private operators in respect of notified routes pending introduction of State Transport Services.

(4) To examine and report on the following proposals made by the Government of Orissa for the amendment of the Motor Vehicles Act—

(a) Amendment of Sections 24, 29 and 31 making it obligatory on a person applying for transfer of his motor vehicle to another person to obtain a "no objection certificate" from the original Registering Authority and for persons applying for transfer and those to whom the transfer is to be effected to be identified before the Registering Authority by two responsible persons of the locality or gazetted officers.

(b) Amendment of section 59 to lay down a general condition that the holder of a permit shall pay all the outstanding dues on account of motor vehicles tax, passenger tax/goods tax and carry the tax clearance certificate in the vehicle.

(c) Amendment of section 60(2A) to give powers to subordinate officers to cancel permits and to enable such officers to compound offences on collection of suitable sum of money.

(d) Amendment of section 123 to make the offence of over loading passenger and goods vehicles cognizable and to bring such offences under a new sub-section to be inserted, so as to provide for a maximum fine of Rs. 500/- for the first offence and Rs. 1,000/- for a subsequent offence and suspension of the registration certificate and permit of the vehicle for a minimum period of four months even for the first offence.

(5) matters incidental to (1) to (4).

4. The Government of India trust that the State Governments and Union Administrations will extend full co-operation to the Committee in its work.

5. The Committee should submit its report by the 15th of August, 1972.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India and also a copy/communication to all States and Union Territories.

The 7th July 1972

No. 39-*TAG*(3)/72.—According to section 24(3) of the Motor Vehicles Act, 1939, read with the Sixth Schedule thereto, the registration mark for motor vehicles consists of the group of letters allotted to each State under the Act, followed by a number containing not more than four digits. At present, legally, the letters on the number plates on motor vehicles have to be in English, and the numerals in the international form of Indian numerals. According to Article 343(1) of the Constitution of India, Hindi in Devanagari script is the official language of the Union. Some States have adopted Hindi as their official language and as the language for correspondence with the Union & other States, which have adopted Hindi as their official language. These States are of the view that the Devanagari script should be used for the display of registration marks on the number plates of motor vehicles and for writing the inscriptions on kilometre stones and sign boards on the national highways. There have also been demands from a few other States for the use of the regional languages for the display of registration marks on motor vehicles.

2. The matter has been under consideration for some time. The issues involved were discussed at the ninth meeting of the Transport Development Council held at Srinagar in August, 1971. Since there was no uniformity of views among the States in regard to the script to be used to the number plates of motor vehicles and on kilometre stones on the national highways, it was agreed that a Working Group should be set up to go into the problem and make recommendations. The Government of India have accepted this conclusion and have accordingly decided to constitute a Working Group to examine the issues involved.

3. The composition of the Working Group will be as follows :—

Chairman

(i) Shri S. N. Sinha, Director General (Road Development) & Additional Secretary, Ministry of Shipping and Transport.

Members

(ii) Shri K. Sivaraj, Joint Secretary, Ministry of Shipping & Transport.

(iii) Shri Kulwant Singh, Commissioner for Home Affairs and Secretary to the Government of Punjab, Transport Department.

(iv) Shri G. P. Pandey, Secretary to the Government of Uttar Pradesh, Transport Department.

(v) Shri P. C. Sen, Deputy Transport Commissioner (Administration), Madhya Pradesh, Gwalior.

(vi) Shri R. S. Kumbhat, Deputy Secretary to the Government of Rajasthan, Home Department.

(vii) Shri A Kitchanan, Joint Secretary to the Government of Tamil Nadu, Home Department.

(viii) Shri Gurudas, Transport Commissioner, Andhra Pradesh.

(ix) Shri S. S. Tinaikar, Director of Transport, Maharashtra.

(x) Shri B. Barua, Commissioner of Transport, Assam.

Member-Secretary

(xi) Deputy Secretary, Ministry of Shipping & Transport (dealing with Road Transport).

4. The terms of reference of the Working Group will be as follows :—

(i) To examine the position regarding the language or languages in which the registration marks on motor vehicles should be displayed and the inscriptions on kilometre stones and sign boards on national highways should be written, having regard to the provisions of the Motor Vehicles Act 1939 the Constitution of India and the Official Language Act and make recommendations about the script of scripts to be used in the registration marks on motor vehicles and on the kilometre stones and on sign boards on the national highways, including the amendments which may be necessary to the Motor Vehicles Act to give effect to the recommendations.

(ii) To suggest, in the light of the recommendations under (i) above, the language or languages that may be used in the forms laid down in the Motor Vehicles Act and the State Motor Vehicles Rules.

5. The Government of India hope that the State Governments and Union Administrations and all others concerned with or interested in the subject matter will afford all necessary assistance to Working Group in its enquiry.

6. The Group will submit its report as early as possible.

ORDER

ORDERED that this be published in the Gazette of India and be also communicated to all concerned.

K. SIVARAJ, Jt. Secy.

MINISTRY OF IRRIGATION AND POWER

New Delhi, the 22nd June 1972

RESOLUTION

No. 8(1)/72-*GB.*—The Government of India and the Government of Bangladesh have decided to establish an Indo-Bangladesh Joint Rivers Commission on a permanent basis to carry out a comprehensive survey of the river systems shared by the two countries, formulate projects concerning both the countries in the fields of flood control and to implement them. The Indian Members of the Joint Commission are as under :

1. Shri N. G. K. Murti, Co-Chairman/Chairman.
2. Shri V. N. Nagaraja, Member.

The other Members will be named in due course.

The Ministry of Irrigation and Power will provide the supporting staff for the Indian Members.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all State Governments for information.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

No. 8(16)/72-*GB.*—The Government of India and the Government of Bangladesh have decided to establish an Indo-Bangladesh Joint Power Coordination Board to examine the feasibility of linking the Power grids of Bangladesh with the adjoining areas of India and to ensure coordination between the two countries in the matter of Power Development. It has been decided that Shri A. K. Ghosh, Vice Chairman, Central Water and Power Commission (Power Wing) shall be the Indian Member on the Board.

The Central Water and Power Commission (Power Wing) will provide the supporting staff for the Indian Member.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all State Governments for information.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

S. N. GUPTA, Jt. Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1972